www.thearyasamaj.org

रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17 आर्य मर्यादा साप्ताहिक आर. नम्बर 26281/74

26 फरवरी व 05 मार्च, 2017

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

मूल्य : 10 रु.	
वर्षः 73	अंक : 48-49
सृष्टि संवत् 1960853117	
26 फरवरी व 05 मार्च, 2017	
दयानन्दाब्द 193	
वार्षिक : 100 रू.	
आजीवन : 1000 रू.	
दूरभाष : 2292926, 5062726	

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व विशेषांक

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में 19 फरवरी 2017 को महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के 193वें जन्म दिवस पर आर्य महासम्मेलन का सफल आयोजन लुधियाना में किया गया। इस आर्य महासम्मेलन में लुधियाना की समस्त आर्य समाजों का भी सभा को पूरा सहयोग मिला। महासम्मेलन की कहानी चित्रों की जुबानी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ज्योति प्रज्वलित कर आर्य महासम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुये। उनके साथ हैं स्वामी सम्पूर्णानन्द जी सरस्वती, श्री मुनीष मदान जी, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न उप प्रधान एवं श्रीमती राजेश शर्मा जी सभा उप प्रधान।

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं स्वामी सम्पूर्णानंद जी, श्री सुरेश मुंजाल जी, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, श्री ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट, श्री रणजीत आर्य, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, अरुण सूद एवं अन्य।

मंच पर उपस्थित चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट सभा उप प्रधान, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार, श्री सुधीर शर्मा सभा कोषाध्यक्ष, श्री प्रेम भारद्वाज जी सभा महामंत्री, श्री प्रेम गुप्ता जी जनरल सैक्रेटरी दयानन्द अस्पताल एवं कालेज, सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी।

ध्वजारोहण के अवसर पर उपस्थित आर्य जनसमूह।

आर्य महासम्मेलन में उपस्थित आर्य जन समूह।

श्री प्रेम गुप्ता जी को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं अन्य।

www.thearyasamaj.org

भारत निर्माता महर्षि दयानन्द

ले.-श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

भारतवर्ष महापुरूषों का देश है। वेदों के रचयिता ऋषियों से लेकर आज तक अनेकों महापुरूषों ने अपने विचारों, कार्यों व जीवन शैली से भारतीय विचारधारा को बनाया, संवारा और परिष्कृत किया है। भारतीय संस्कृति की मूलधारा वेदों से प्रवाहित होती है। वेद ही भारतीय साहित्य, धर्म, संस्कृति एवं जीवन मूल्यों का उद्‌गम स्थल है। कालान्तर में मुख्य धारा से निकली अनेक धाराएं, भिन्न-भिन्न दिशाओं में बह निकली। हम वेद गंगा को छोडकर उन धाराओं की ओर आकर्षित हो गए। धीरे-धीरे उनकी पवित्रता, निर्मलता समाप्त होती चली गई। हमें यह भी अनुभव नहीं हुआ और हम उन्हीं में डुबकी लगाते रहे। धीरे-धीरे अन्धकार गहराता गया। समाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वासों ने हमारे जीवन मूल्यों को ही समाप्त कर दिया। इसी कारण हमें पहले मुगलों की अधीनता और फिर अंग्रजों की गुलामी सहनी पड़ी। भारतीय वैदिक संस्कृति, अपने गौरवमय इतिहास को भूलकर अपना अस्तित्व ही खो बैठी।

इसी अन्धकार को मिटाकर, ज्ञानदीप जलाने का दुष्कर कार्य महर्षि दयानन्द ने सम्भाला। सामाजिक विषमताओं, अन्धविश्वासों की बेड़ियों ने समाज को इस प्रकार से जकड़ कर रखा था कि एक कदम बढ़ाना भी मुश्किल हो गया था। तब ऋषि दयानन्द ने वेदों की मशाल प्रज्वलित की और अज्ञान विद्या के अन्धकार को हटाने के लिए पथ प्रदर्शन किया। फाल्गुन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी को बाल मूलशंकर ने शिवरात्रि को ही ज्ञान की प्रथम किरण देखी थी। जिज्ञासा से वे व्याकुल हो उठे। शिवरात्रि की छोटी सी घटना ने उन्हें सच्चे शिव को प्राप्त करने का ज्ञान कराया। इसी कारण हम इसे बोधरात्रि कहते हैं। वेद ज्ञान की जिज्ञासा को लेकर 21वर्ष की अवस्था में वे घर से निकल पड़े।

हम क्या थे? क्या हो गए? और क्या होगें? महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बताया कि हम क्या थे? उन्होंने हमारे देश के गौरवशाली इतिहास का स्मरण कराया। संसार में सर्वोच्च समझी जाने वाली संस्कृति और वेदों द्वारा प्रतिपादित सत्य धर्म का ज्ञान कराया। उन्होंने बताया कि हम, हमारा देश, हमारी परम्पराएं, हमारे जीवन मूल्य उत्कृष्ट हैं। हमें उन पर गर्व करना चाहिए। हमारा राष्ट्र महान् है। अपने देश, धर्म और संस्कृति पर हमें गर्व करना चाहिए। महर्षि का यह सन्देश जन-जन के हृदय में व्याप्त हो तभी राष्ट्र का कल्याण सम्भव है। महर्षि मनु के वाक्य को उद्‌धृत करते हुए उन्होंने कहा कि स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा: हमारे देश की संस्कृति महान् थी और यहां पर संसार भर के लोग शिक्षा प्राप्त करने आते थे। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द ने बताया कि अच्छे से अच्छा विदेशी राज्य बुरे से बुरे स्वदेशी राज्य की बराबरी नहीं कर सकता। इसलिए उन्होंने स्वराज्य प्राप्ति पर जोर दिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज में फैली कुरीतियों, पाखण्ड़ों, अन्धविश्वासों को दूर करने में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। शिवरात्रि के पर्व पर जागरण करके महर्षि दयानन्द के हृदय के अन्दर जो ज्ञानज्योति प्रज्वलित हुई थी उस ज्ञान की ज्योति को उन्होंने बुझने नहीं दिया। सच्चे शिव का प्राप्ति के लिए उन्होंने घर का त्याग किया और जब तक ज्ञान की पिपासा शान्त नहीं हुई तब तक विश्राम नहीं किया। महर्षि दयानन्द का यह बोध राष्ट्र के लिए बोध पर्व बन गया। महर्षि दयानन्द के जागरण से ही राष्ट्र को गए नई दिशा मिली। अगर उस रात महर्षि दयानन्द जी नहीं जागे होते तो आज राष्ट्र की क्या स्थिति होती इसका अनुमान हम स्वयं लगा सकते हैं।

महाशिवरात्रि के पर्व पर लोग व्रत रखते हैं, जागरण करते हैं, शिवलिंग की पूजा करके शिव की महिमा का गान करते हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि आज तक किसी को बोध हुआ है? इस पर आज विचार करने की आवश्यकता है। शिवरात्रि की उस ऐतिहासिक रात को कौन भूल सकता है जिस रात को एक बालक जागरण करके महर्षि दयानन्द बन गया। अगर उस रात बालक मूलशंकर को बोध न होता तो न वे महर्षि दयानन्द बनते और न ही आर्य समाज की स्थापना होती। एक साधारण सी घटना से एक नई क्रान्ति का संचार हुआ और एक नए युग ने जन्म लिया। महर्षि दयानन्द अपने जीवन में वो कार्य कर गए हैं जो मानवता के लिए आज भी पथ प्रदर्शक का कार्य कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द के कार्य आज भी उतने ही महत्वपूर्ण है जितने उस समय में थे।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 24 फरवरी को शिवरात्रि पर्व अर्थात् महर्षि दयानन्द का बोध दिवस सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाया गया। शिवरात्रि का पर्व आर्य जगत् के लिए आत्मबोध और चिन्तन का पर्व है। यह पर्व हमें स्मरण दिलाता कि हमने महर्षि दयानन्द के कार्यों को अपने जीवन में कितना स्थान दिया है। महर्षि दयानन्द का प्रत्येक कार्य, प्रत्येक चिन्तन राष्ट्र के उद्धार के लिए था, राष्ट्र की उन्नति के लिए था। यदि हम मूलशंकर की तरह सत्य को प्राप्त करने का, धर्म के मार्ग पर चलने का संकल्प लें तो राष्ट्र का उद्धार हो सकता है। शिवरात्रि संकल्प का पर्व है, प्रेरणा का पर्व है। इस पर्व पर हम संकल्प लेकर हमने महर्षि दयानन्द के ऋण से उऋण होने के लिए कार्य करना है। महर्षि दयानन्द का प्रत्येक कार्य, प्रत्येक चिन्तन राष्ट्र के उद्धार के लिए था, राष्ट्र की उन्नति के लिए था।

www.thearyasamaj.org

बोधोत्सव का महत्व और संदेश

ले. श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन में सम्वत् १८९४ की शिवरात्रि का दिन महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन महर्षि दयानन्द की प्रसुप्त सोई हुई चेतना ने अंगडाई ली थी। 14 वर्ष के बालक मूलशंकर ने अपने पिता द्वारा बताई गई शिव की महिमा को सुनकर शिवरात्रि के व्रत को रखने का संकल्प लिया था। बालक मूलशंकर के मन में उनके पिता के द्वारा बताई हुई शिव की छवि अंकित थी। इस कारण वे शिव को महाशक्तिशाली, दैत्यों का संहार करने वाला समझते थे। माता के रोकने पर भी बालक मूलशंकर ने दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली कि आज मैं व्रत रखूंगा और रात्रि को जागरण करके असुरों का संहार करने वाले शिव के साक्षात् दर्शन करूंगा। बालक मूलशंकर के अन्दर दर्शन करने की अभिलाषा बलवती हो गई और वे उपवास के सभी कष्ट सहने के लिए तैयार हो गए। सारा दिन उपवास रखकर रात्रि को अपने पिता के साथ जागरण के लिए शिव मन्दिर में गए। जब अन्य परम्परा प्रेमी श्रद्धालु प्रौढ़जन अपने संकल्प को जाग्रत न रख सके और एक-एक करके निद्रा देवी की गोद में चले गए तो बालक मूलशंकर अपनी आँखों में पानी के छींटे दे-देकर अपने जागरण व्रत का पूर्णतया पालन करता हुआ अपनी अपार श्रद्धा का परिचय दे रहा था। परन्तु वह श्रद्धा तब कुण्ठित हो गई जब छोटे से चूहे को स्वच्छन्द वृत्ति से उछल कूद करके शिवजी की मूर्ति पर रखे प्रसाद को खाते देखा। इस दृश्य ने बालक मूलशंकर को अन्दर तक झकझोर कर रख दिया। एक तरफ वर्तमान दृश्य था और दूसरी तरफ पिता की सुनाई हुई अनेक कपोल कल्पित कथाएं। कुछ समय तक यही अन्तर्द्वन्द चलता रहा परन्तु जब स्वयं कोई समाधान नहीं कर पाए तो अपने पिता को जगाकर अपनी शंका का समाधान करना चाहा। वहां से भी निराशा ही हाथ लगी। पिता कर्षन जी ने भी यह कहकर अपना पीछा छुड़ाया कि यह शिवलिंग तो प्रतीक है, सच्चा शिव तो कैलाश पर रहता है। बालक मूलशंकर की बुद्धि ने बल पकड़ा और सच्चे शिव को जानने की तीव्र इच्छा का उदय हुआ। तदनन्तर अपनी प्रिय बहन तथा चाचा के आकस्मिक निधन ने उस जलती हुई आग में घी का काम किया। परिणामतः रोग, मृत्यु आदि घटनाओं से व्याकुल होकर मूलशंकर ने सच्चे शिव की प्राप्ति तथा मृत्युञ्जय बनने के उद्देश्य से घर छोड़ने का निश्चय किया।

बालक मूलशंकर ने श्रद्धानिष्ठ होते हुए भी अपनी मेधा शक्ति को, सत्यासत्य के विवेक को कभी कुण्ठित नहीं होने दिया। सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य के त्यागने की वृत्ति को धारण करते हुए उन्होंने कठोर तपस्या एवं एकाग्रनिष्ठ चिन्तन के उपरान्त सच्चे शिव के स्वरूप को तथा मृत्युञ्जय बनने के उपाय को खोज निकाला। सम्वत् १८९४ में हृदयस्थली में बोया हुआ बीज कठोर तपस्या के बाद पल्लवित और कुसुमित होकर समस्त देश को अपनी सुगन्धि से सुगन्धित कर गया। जिससे देश में एक नई क्रान्ति का जन्म हुआ और एक नए युग का सूत्रपात हुआ।

आवश्यकता इस बात की है कि हम इस बोधरात्रि के पावन पर्व पर ऋषि द्वारा प्राप्त उस बोध के, उस सत्यज्ञान के मूलमन्त्र को समझे और उसके स्वर में स्वर मिलाकर पूर्णनिष्ठा के साथ अपने जीवन का तदनुसार निर्माण करते हुए जनकल्याण के कार्यों में जुट जाएं। महर्षि के उस बोध का प्रथम मूल मन्त्र है-अन्ध श्रद्धालु बनकर मूर्ति पूजा करना छोड़ दो। यह मूर्तिपूजा किसी पत्थर में उत्कीर्ण ब्रह्मा, विष्णु महेश आदि की कल्पित प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा करना मात्र ही नहीं अपितु प्रत्येक ग्रन्थ, परम्परा, रूढि या कर्मकाण्ड के आन्तरिक भाव को बिना बुद्धि की कसौटी पर तोले उसके बाह्य रूप पर टिके रहना भी मूर्ति पूजा ही है। उसे भी त्याग दो। प्रत्येक ग्रन्थ, विचार, परम्परा और कर्मकाण्ड को सत्य की कसौटी पर परखो और उसमें जो सत्य अंश दिखाई दे उसे ग्रहण करो और जो असत्य है उसे छोड़ दो। अपने आपको किसी पूर्वाग्रह या मिथ्याग्रह से ग्रस्त मत समझो। जीवन की सिद्धि सत्यनिष्ठ होने में है, केवल परम्पराओं में नहीं। इसलिए महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के नियम में उपदेश दिया कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

महर्षि दयानन्द का दूसरा मूलमन्त्र है कि जीवधारी मानव को ऋतावान् एवं ऋतावृधः बनकर इन दोनों के लाभ को प्राप्त करने का यत्न करना चाहिए। तभी जीवन की सफलता है। केवल योग या ज्ञानमार्ग द्वारा ही परमात्मा का साक्षात्कार नहीं होता, अपितु करूणामय होकर कर्मयोग द्वारा समाज का कल्याण करना, उसमें सत्य और न्याय प्रतिष्ठित करके उसे सत्यं शिवं सुन्दरं बनाना भी शिव की उपासना का एक प्रकार है। यह सच्चे शिव की प्राप्ति का एक सुन्दर सोपान है। इसी कारण संसार के प्राणियों की उपेक्षा करके केवल आत्मलाभ के लिए किसी पर्वत कन्दरा के अन्दर सतत ब्रह्मलीन रहने की अपेक्षा ऋषि ने ईश्वर को साक्षी रखकर जनमानस में सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित करने के निए और उसके निमित्त अपने जीवन की बलि देना भी स्वीकार किया।

महर्षि दयानन्द की दृष्टि में संसार का उपकार करना भी सच्चे शिव की पूजा का स्वरूप है। भौतिकता के इस वर्तमान युग में भोग तृष्णा में संलिप्त तथा असत्य एवं अन्याय से पीड़ित समाज को उससे मुक्त करना सच्ची शिव पूजा है।

यदि हम इस बोधरात्रि के अवसर पर ऋषि के उस संदेश को जो उन्होंने कठोर तपस्या एवं साधना के उपरान्त प्राप्त बोध के अनन्तर हमें दिया। उसके अनुसार आर्य समाज के प्रचार और प्रसार के कार्यो को आगे बढ़ाएंगे, तभी इस बोधोत्सव को मनाने की सार्थकता है। यह समय केवल पर्व मनाने का नहीं अपितु चिन्तन और मनन का पर्व है। सत्य और धर्म के प्रति बोध का भाव रखकर आर्यत्व के गुणों को धारण करना ही सच्चा बोध है।

www.thearyasamaj.org

शिवरात्रि पर्व पर सच्चे शिव को जानें

लेखक-: श्री सुधीर शर्मा कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

वैसे तो शिवरात्रि प्रतिवर्ष आती है और आगे भी आती रहेगी। यह पर्व बहुत पुराना है। भारत के लोग इसे चिरकाल से मनाते चले आ रहे हैं। शिव की पूजा और अर्चना के लिए यह पर्व प्रसिद्ध है। फाल्गुन वदी चतुर्दशी को शिव पूजन से बहुत बड़ा पुण्य मिलता है, पौराणिक जगत में ऐसा प्रसिद्ध है। शिव कौन है? कहां रहता है? उसका स्वरूप क्या है? उसका पूजन करने से क्या लाभ है? और वह पूजन कैसे किया जा सकता है? यह जानने का प्रयास कभी भी किसी के द्वारा नहीं किया गया। फाल्गुण वदि १४ की रात्रि के महत्त्व के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मतावलम्बियों के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। अपने पौराणिक भाई इस शिवरात्रि को इसलिए अधिक महत्त्व देते हैं कि इस दिन शिव ने सृष्टि की उत्पत्ति की थी और प्रलय भी इसी दिन करेगा। इसलिए इस भयंकर समय को टालने के लिए शिव के उपासक शिव की आराधना करते हैं। आर्य समाज में इस शिवरात्रि को बोध रात्रि के रूप में मनाते हैं, क्योंकि आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को इसी शिवरात्रि के दिन सच्चे शिव का ज्ञान हुआ था। यदि सच कहा जाए तो आर्य समाज की स्थापना केवल चूहे के कारण ही हुई जिसको देखकर मूलशंकर ने ज्ञान प्राप्त किया और उनके हृदय में सच्चे शिव को प्राप्त करने की अभिलाषा उत्पन्न हुई। शिवरात्रि की इस घटना से तो आर्य बन्धु अवगत ही हैं कि मूलशंकर के पिता शिव के उपासक थे और अपने पुत्र को भी शिव का उपासक बनाना चाहते थे। इसलिए शिवरात्रि के व्रत की महानता बताकर मूलशंकर को व्रत रखने के लिए बाध्य किया। मूलशंकर को भी शिव के दर्शन करने की आकांक्षा थी। अत: वह उसको प्राप्त करने के लिए शरीर के कष्टों को सहकर भी जागता रहा। परन्तु मूलशंकर कुछ ही क्षणों में देखता है कि जिस शिव के वह दर्शन पाना चाहता था उसी शिव पर एक छोटा सा चूहा आकर उछल कूद मचा रहा है तथा उसके नैवेद्य को भी खा रहा है। लेकिन वह शिव अपनी रक्षा के लिए हिल भी नहीं रहा था। तब मूलशंकर के मन में एक ज्ञान की किरण जागी, फिर उसने विचार किया कि जिस शिव ने सारे संसार को उत्पन्न किया, जो सारे संसार का पालन करता है वह शिव और ही है। इसी धारणा को मन में लेकर मूलशंकर उसकी खोज में आगे बढ़ा। जहां-जहां पर भी उन्हें पता चला कि अमुक तपस्वी योगी या ऋषि सच्चे शिव के दर्शन करा सकता है, अनेकों कष्ट उठाकर भी उस व्यक्ति तक जाने की चेष्टा की। अन्त में इसी प्रकार विचरते हुए मथुरा के एक तपस्वी योगनिष्ठ ऋषि की प्राप्ति हुई तथा उनके चरणों में बैठकर सच्चे शिव के रहस्य को जानकर ज्ञान प्राप्त किया।

शिवरात्रि के पर्व पर महर्षि दयानन्द के अन्दर प्रदीप्त हुई ज्ञान की ज्योति ने गुरू विरजानन्द के चरणों में प्रज्वलित होकर अपने प्रकाश को फैलाया और उसके परिणामस्वरूप जिन लुप्त परम्पराओं को जगाया उसी के आधार पर आर्य समाज की नींव रखी गई। महर्षि दयानन्द जी शिवरात्रि का व्रत न रखते तो उन्हें सच्चे शिव को प्राप्त करने के लिए प्रेरणा भी नहीं मिलती और न ही आर्य समाज की स्थापना होती। महर्षि दयानन्द जी उस शिवरात्रि को स्वयं जगे और बाद में अपना सारा जीवन दूसरों को जगाने में लगा दिया। जो चिंगारी उनके हृदय में उस शिवरात्रि को प्रज्जवलित हुई थी उस चिंगारी को उन्होंने बुझने नहीं दिया। अनेकों पर्वतों, कन्दराओं, गुफाओं में जाकर उन्होंने उस चिंगारी को खूब प्रज्जवलित करने का प्रयास किया और बुझने के स्थान पर उन्होंने उसे उसी प्रकार जलाए रखा। गुरू विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर उनकी सारी शंकाओं का समाधान हो गया। जिस प्रकार का ज्ञान महर्षि दयानन्द जी प्राप्त करना चाहते थे, उस ज्ञान की प्राप्ति उन्हें गुरू विरजानन्द की कुटिया में प्राप्त हुई। गुरू विरजानन्द ने आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन से उनके अन्दर के संशयों को मूल रूप से नष्ट कर दिया। जिस शिव को जानने के लिए उन्होंने घर को त्याग कर जंगल का रास्ता पकड़ा था, उसका यथार्थ बोध उन्हें उनके चरणों में बैठकर प्राप्त हुआ। अगर उस शिवरात्रि को महर्षि दयानन्द सो जाते तो भारत का भाग्य सो जाता। वे स्वयं जगे और सारे देश को जगा दिया। लोग वेदोक्त मार्ग को भूल कर अन्य मत-मतान्तारों में जकड़े हुए थे। पाखण्ड और अन्धविश्वास के कारण समाज में अनेक प्रकार की कुरीतियां बढ़ रही थी। ऐसी परिस्थिति में महर्षि दयानन्द ने गुरू विरजानन्द से जो आर्ष ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त किया था, उसी ज्ञान से उन्होंने लोगों को बताया कि वेदों में कहीं पर भी मूर्ति पूजा का विधान नहीं है। अपने सम्पूर्ण जीवन में वे इसी प्रकार वेदों के प्रचार का कार्य करते रहे।

उन्होंने अपनी संस्कृति, सभ्यता और मातृभाषा को अपनाने पर जोर दिया। परिणामस्वरूप देश में एक नई क्रान्ति का उदय हुआ और लोगों में अपने देश के प्रति स्वाभिमान की भावना पैदा हुई। यह सब उस शिवरात्रि के कारण हुआ जिस रात्रि को महर्षि दयानन्द ने जागरण किया।

शिवरात्रि का पर्व और महर्षि दयानन्द बोधोत्सव का पर्व हम कई वर्षों से मनाते चले आ रहे हैं, परन्तु इस शिवरात्रि और बोध रात्रि का क्या अभिप्राय है, यह कभी हमने सोचा भी नहीं, अगर आज हम सभी इस रात्रि के महत्त्व को समझ लें तो हमें भी मूलशंकर की तरह बोध प्राप्त हो सकता है और यह रात्रि हमारे लिए भी बोध रात्रि बन जाती है। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द ने उस रात्रि को बोध प्राप्त किया था उसी प्रकार हम भी महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र पढ़कर उनके जीवन से सच्चे शिव को प्राप्त करने का संकल्प ले सकते हैं।

www.thearyasamaj.org

आदर्श समाज सुधारक- महर्षि दयानन्द

लेखक-: श्री अशोक परूथी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को एक समाज सुधारक के रूप में जाना जाता है। महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व हमारा समाज अनेक प्रकार की कुरीतियों से ग्रसित हो चुका था। इन कुरीतियों एवं बुराईयों के कारण समाज में छूआछूत, वर्ण व्यवस्था का विकृत रूप, धार्मिक जगत में पाखण्ड, अन्धविश्वास और मूर्तिपूजा के कारण समाज का शोषण हो रहा था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज को सही दिशा प्रदान करने के लिए लगा दिया। उनका मानना था कि वर्ण व्यवस्था के शुद्ध रूप से प्रचलित होने, नारी को शिक्षा का अधिकार मिलने से ही समाज का उद्धार हो सकता है। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी शिक्षा के ऊपर विशेष बल दिया। इन समाज सुधार के कार्यों के कारण महर्षि दयानन्द को समाज सुधारक की संज्ञा दी गई परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत के आधुनिक तत्त्ववेता, सुधारक तथा श्रेष्ठ पुरूष ही नहीं थे अपितु वह आधुनिक भारत के कुछ प्रमुख राष्ट्र निर्माताओं में से एक हैं। महर्षि की असंख्य देन हैं मानवता और विश्व को परन्तु उनकी तीन ऐसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। उन्नीसवीं शताब्दी में देश के शिक्षित वर्ग में नास्तिकता पनप रही थी और सामान्य जनता अन्धविश्वास और रूढ़ियों से ग्रस्त थी। उन्होंने आचार और धार्मिक पुनरूत्थान के आधार पर नए भारत की नींव सुदृढ़ की। उन्होंने घोषित किया कि वेदों तथा प्राचीन भारतीय चिन्तन में विज्ञान सम्मत और नैतिक धार्मिक सत्य निहित है। उन्होंने वेदों तथा प्राचीन तत्त्वज्ञान को तत्कालीन बुद्धिजीवियों के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत किया कि सम्पूर्ण बुद्धिजीवि वर्ग भी उससे सहमत हो गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ईश्वर के स्वरूप को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि समाज का बुद्धिजीवि वर्ग उनकी बातों से सहमत हो गया। परन्तु समाज के ठेकेदार तथाकथित पण्ड़ितों ने तथा मठाधीशों ने उनकी बात का विरोध किया क्योंकि उनकी स्थापित की हुई परम्पराएं हिल गई थी। प्राचीन धर्मग्रन्थों और तत्त्वज्ञान में से उन्होंने ऐसे मोती प्रस्तुत किए जिन्हें देशवासियों ने पूरे विश्वास और आस्था के साथ ग्रहण किया। परिणामस्वरूप पश्चिमी एवं प्रतिस्पर्द्धी सम्प्रदायवादियों के आक्रमण पस्त हो गए। हताश भारतीय मानस भारतीय तत्त्वज्ञान की ज्योति से एक नई प्रेरणा प्राप्त कर नैतिक एवं वैचारिक दृष्टि से स्वावलम्बी और शक्तिसम्पन्न होने लगा। ऋषि की यह वैचारिक देन उनकी पहली उपलब्धि थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी प्राचीन मान्यताओं एवं वैदिक सिद्धान्तों को समाज में स्थापित करने के लिए अनके प्रकार के कष्ट सहे, संसार के अन्य महापुरूषों की भांति उन्होंने शारीरिक यातनाएं सही। विरोधियों, प्रतिस्पर्द्धियों के विरोधों और अत्याचारों का सामना किया। पूरे विश्वास और साहस के साथ उन्होंने देश में व्याप्त कुरीतियों, अज्ञान, विषमता और अन्याय का सामना किया। इसी काल में उन्होंने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। इसी के साथ उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदों के भाष्य आदि प्रस्तुत कर हिन्दी के माध्यम से जनता से सीधा सम्पर्क स्थापित किया। उन्होंने किसी संस्था, मठ मन्दिर की गद्दी नहीं सम्भाली, न वह अपने नवीन आन्दोलनों के सर्वे सर्वा बने। वह तो अपने आपको समाज का एक सामान्य सदस्य कहते थे। इसके बावजूद केवल अपने व्यक्तिगत प्रयत्नों से उन्होंने देश में एक अभूतपूर्व सामाजिक एवं धार्मिक क्रान्ति कर दी। शंकराचार्य के बाद पदयात्रा के माध्यम से अपूर्व धार्मिक क्रान्ति करने वाले वह दूसरे संत थे। महर्षि की यह धार्मिक क्रान्ति उनकी दूसरी बड़ी उपलब्धि थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने एक कुशल चिकित्सक की तरह समाज में प्रचलित कुरीतियों का ईलाज किया। इन कार्यों को सम्पन्न कर आर्य समाज की गरिमा बढ़ी है। परन्तु महर्षि की सबसे बड़ी उपलब्धि उनकी मानवता को वह वैचारिक देन थी जो उन्होंने आर्य समाज के नियमों, सामाजिक व्यवस्था और शिक्षा के क्षेत्र में नई दृष्टि देकर प्रस्तुत की है। आर्य समाज के नियम मानवता के लिए पथ प्रदर्शक हैं। ऋषि न स्वयं समाज के सूत्रपात बने, न उन्होंने कोई अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। बल्कि उन्होंने आर्य समाज के नियमों के द्वारा एक नई जीवन दृष्टि दी। ऋषि ने सीख दी- अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए, दूसरे आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना और शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। तीसरे सब अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रहें, प्रत्युत सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें, साथ ही मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। ऋषि ने अपने जीवनकाल के लिए तथा बाद के लिए इन नियमों को ही समाज और राष्ट्र का पथ प्रदर्शक नियुक्त किया था।

बोधपर्व हम सब आर्य जनों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करता है। किस प्रकार हम निराशा के भंवर से निकलकर समाज को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं, यह शिक्षा हमें उस साधारण सी दिखने वाली घटना से मालूम होती है। महाजनो येन गताः सः पन्थाः की उक्ति के अनुसार हम भी महर्षि दयानन्द के पदचिह्नों पर चलते हुए समाज एवं राष्ट्र के लिए हितकारी कार्य करें।

www.thearyasamaj.org

जन्म और वैराग्य

महर्षि दयान्द के जीवन से सम्बन्धित यह लेख इन्द्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित पुस्तक "महर्षि दयानन्द" से लिया गया है। लेखक उच्चकोटि के वक्ता तथा इतिहासकार थे। आशा है पाठक इसे पढ़कर लाभान्वित होंगे। -संपादक आर्य मर्यादा

काठियावाड़ प्रान्त में मौरवी राज्य के टंकारा नामक छोटे-से ग्राम में अम्बाशंकर नाम का एक औदीच्य ब्राह्मण रहता था। विक्रमी सं. 1881 के पौष मास में उसके यहाँ एक बालक ने जन्म लिया। बालक का नाम मूलशंकर रखा गया। संन्यास लेने पर इसी मूलशंकर का नाम दयानन्द हुआ। अम्बाशंकर के यहाँ औदीच्य ब्राह्मण होने पर भी भिक्षावृत्ति नहीं थी, लेन-देन का व्यवहार होता था और रियासत की ओर से जमींदारी भी प्राप्त थी, जो तहसीलदारी के बराबर थी।

इस प्रकार एक पुराने ढंग के सामान्य घर में दयानन्द का जन्म हुआ। यह जानने का कोई भी उपाय नहीं है कि दयानन्द के माता-पिता किस स्वभाव के थे। यह भी नहीं जाना जा सकता कि बालक मूलशंकर पर प्रभाव डालने वाले गुरुओं में से कोई ऐसा भी था, जिसे 'असाधारण' कह सकें। प्रारम्भिक जीवन की घटनाओं के बारे में हमें जो कुछ भी पता चलता है, स्वामी दयानन्द का अपना कथन ही उसका साधन है, दूसरा कोई नहीं। गुजरातियों में सन्तान-प्रेम बहुत अधिक होता है। परमहंस दयानन्द डरा करते थे कि 'कहीं मेरा परिचय पाकर सम्बन्धी लोग न घेर बैठें।' इस डर से वह अपने जीवन के प्रारम्भिक भाग का अधिक परिचय नहीं दिया करते थे। यदि उनके परिवार और शैशवावस्था के वृत्तान्त जानने का कोई साधन होता तो निःसन्देह हमें कई मनोरंजक बातें जानने का अवसर मिलता। संसार में आकस्मिक कुछ भी नहीं है। जिन घटनाओं को हम आकस्मिक कहते हैं, उन्हें समझने की या तो शक्ति नहीं होती या साधन नहीं होते। शक्ति या साधन के अभाव से बाधित होकर हम अपने अज्ञान को 'आकस्मिक' शब्द के आवरण में छिपाने का यत्न करते हैं। दयानन्द के चित्त में जो-जो विचार-तरंगें उत्पन्न हुईं, जो-जो क्रान्तियाँ खड़ी हुईं, वे आकस्मिक नहीं थीं, तथापि हमें यह मान लेना चाहिए कि उनके कारणों पर पूरा प्रकाश डालने के साधनों का अभाव है। हम नहीं जानते कि मूलशंकर के प्रारम्भिक गुरु कौन थे, और न हमें यही ज्ञात है कि उसके खेल के साथी किस श्रेणी के थे। यह जानने का कोई उपाय नहीं है कि दयानन्द में जो दृढ़ता और निर्भयता थी, वह माता की ओर से प्राप्त हुई थी या पिता की ओर से। अस्तु, जो नहीं जाना जा सकता, उसे छोड़कर हम उसकी ओर दृष्टि डालते हैं जो जाना जा सकता है।

आठवें वर्ष में मूलशंकर का यज्ञोपवीत-संस्कार किया गया और गायत्री, सन्ध्या, रुद्री आदि कण्ठस्थ कराये गये। प्रतीत होता है कि मूलशंकर की स्मरण-शक्ति प्रारम्भ से ही अच्छी थी। वह स्मरण-शक्ति प्रचार के दिनों में दयानन्द को प्रतिपक्षियों के लिए असह्य बना देती थी। प्रचार के कार्य में कई पण्डितों की अपेक्षा वह ऋषि की अधिक सहायता करती थी। मूलशंकर के पिता स्वभाव से कुछ रूखे और कड़े प्रतीत होते हैं। सम्भव है, रियासत की ओर से उन्हें तहसीलदारी का कार्य सौंपा गया था, जिसके प्रभाव से उनके स्वभाव में उग्रता आ गई हो। उधर मूलशंकर की माता प्रेममयी प्रतीत होती हैं। वह बच्चे से वैसा ही लाड़ करती थीं, जैसा लाड़ प्रायः माताएँ किया करती हैं। मूलशंकर के अन्य-सम्बन्धियों के विषय में हम इतना ही जानते हैं कि उनका एक चाचा था, जो बहुत स्नेह करता था और अपनी छोटी बहन से भी बालक का बहुत प्रेम था।

एक ब्राह्मण के बालक को जैसी प्रारम्भिक शिक्षा मिलनी चाहिए, वह मूलशंकर को प्राप्त होती रही। 14 वर्ष की आयु तक वह यजुर्वेद-संहिता कण्ठस्थ कर चुका था, व्याकरण में भी उसका प्रवेश हो गया था। इतना पढ़-लिख लेने पर मूलशंकर के गुरुओं ने यह सम्मति बनाई कि अब वह इस योग्य हो गया है कि कुल-क्रमागत धार्मिक कृत्यों में भी भाग लेने लगे। 1894 विक्रमी की माघ बदी 14 को शिवरात्रि का व्रत था। शायद ही कोई पुराने ढंग का हिन्दू घराना होगा, जहाँ यह व्रत न माना जाता हो। शिवरात्रि की रात को शिव का अर्चन होता है और लंघन करना पड़ता है। अन्न और नींद, दोनों का इकट्ठा ही लंघन अधिक पुण्यजनक समझा जाता है। अनुभवी लोग जानते हैं कि बालकों के लिए इन दोनों में से एक लंघन भी सम्भव नहीं है ; फिर जब दोनों का यत्न किया जाय तो कैसा डरावना बन जाता है ! मूलशंकर के सामने जब शिवरात्रि का व्रत रखने का प्रस्ताव किया गया, तब वह पहले राजी नहीं हुआ। कोई खास लाभ दिखाई दिये बिना कोई भी बालक भूख

और नींद से लड़ने को तैयार नहीं होता। इन दो शत्रुओं से युद्ध करना तो जवानों और बूढ़ों के लिए भी दुष्कर है ; मूलशंकर तो अभी 14 वर्ष का विद्यार्थी था। माता ने बालक की अनिच्छा में दो-एक युक्तियाँ देकर सहायता की-'लड़का अभी छोटा है, इसे दिन में चार बार खाने की आदत है, यह कैसे भूखा रहेगा ? रात को यह अँधेरे से पहले ही सो जाता है, रात भर कैसे जागेगा ?' हम कल्पना कर सकते हैं कि माता ने प्रेमवश होकर ऐसी ही युक्तियाँ दी होंगी।

तब पिता ने बालक की कल्पना-शक्ति को अपना सहायक बनाने का यत्न किया। शिव का माहात्म्य सुनाया, शिव-रात्रि की पुराणों में गाई हुई महिमा बताई और स्वर्ग के सुन्दर दृश्य खींचकर कोमल प्रतिभा को उत्तेजित करने का यत्न किया। यत्न में सफलता हुई। मूलशंकर शिव-रात्रि का व्रत रखने के लिए तैयार हो गया। नियत समय पर पुजारी और गृहस्थ लोग मन्दिर में पूजा आदि कार्यों में लग गये। मूलशंकर अपने पिता के साथ बैठा हुआ सब-कुछ देख और सुन रहा था। उसका हृदय दिन में सुनी हुई कहानियों से पूर्ण था। विश्वास और श्रद्धा का अंकुर उत्पन्न हो गया था, आशा और सम्भावना से प्रेरित होकर वह व्रत का पूरा पुण्य लूटने के लिए तैयार हो बैठा था।

पूजन हो गया। पुजारी और गृहस्थ लोग जागरण के लिए बैठ गये। धीरे-धीरे आँखें मुँदने लगीं, सिर झुकने लगे, लोग एक-दूसरे के कन्धे या छाती पर सिर धरकर लुढ़कने लगे। कुछ ही घण्डों में मन्दिर में सन्नाटा छा गया और जो लोग रातभर जगकर पुण्य लूटने का संकल्प किये बैठे थे, वे निद्रादेवी की सुखमय गोद का आनन्द लेने लगे। सब सो गये, केवल एक भक्त जागता रहा। वह भक्त बालक मूलशंकर था। उसकी दृष्टि बराबर शिवलिंग पर गड़ी हुई थी। वह उस अद्‌भुत शक्ति-सम्पन्न देवता की ओर चावभरी नज़र से देख रहा था। देखता क्या है कि मन्दिर में सन्नाटा पाकर चूहे बिलों से निकल आए हैं ; मूर्ति के इर्द-गिर्द चावल आदि के जो दाने पड़े हैं उन्हें खा रहे हैं और बीच-बीच में ऊपर भी चढ़ जाते हैं। मूलशंकर ने सोचा कि जो महादेव बड़े-बड़े दानवों के व्यतिक्रम को नहीं सह सकता और त्रिशूल लेकर उनका संहार करता है, वह इन मूसों को सिर पर चढ़ने से तो अवश्य रोकेगा। और कुछ नहीं तो सिर हिलाकर उन्हें भगा देगा, परन्तु उसने आश्चर्य और विस्मय से देखा कि वह पत्थर-पत्थर ही रहा, हिला-डुला नहीं। तब क्या यह पत्थर ही वह शिव है जो कैलास पर निवास करता है, जिसमें संसार का संहार करने की शक्ति है, जिसके त्रिशूल की ज्योति से दानवों के कलेजे काँप जाते हैं ? नहीं, वह कोई और ही शिव होगा-इसमें और उसमें अवश्य भेद है। ये सब विचार मूलशंकर की तीव्र प्रतिभा से संस्कृत मन में उठने लगे। वह दिन में शिव-माहात्म्य सुन चुका था। उसे वह याद आने लगा और जो कुछ देखा उसकी रोशनी में सुना हुआ माहात्म्य निर्मूल प्रतीत होने लगा।

चिन्तित मूलशंकर ने शंका निवृत्त करने के लिए पिता को जगाया। पिता के पास प्रतिभाशाली पुत्र के गहरे प्रश्नों का उत्तर कहाँ था ? वह जिज्ञासु की जिज्ञासा को तृप्त न कर सका। मूलशंकर निरुत्साहित होकर मन्दिर से घर चला आया और प्रेममयी माँ से अपनी भूख की शिकायत की। 'मैं तो पहले ही कहती थी कि तू भूखा न रह सकेगा' इत्यादि बहुत-सी बातें माता ने कहीं होंगी। माता ने पुत्र को पेट भरकर खिला दिया और बिस्तर पर सुला दिया।

यह घटना मूलशंकर के जीवन में मौलिक परिवर्तन उत्पन्न करने का कारण हुई। मूर्ति-पूजा पर से उसकी श्रद्धा उठ गई। कई लोग आशंका किया करते हैं कि इतनी छोटी-सी बात और वह भी इतनी छोटी-सी अवस्था में इतना भारी परिणाम कैसे उत्पन्न कर सकती थी ? अनुभव से देखा गया है कि ऐसी छोटी बातें छोटी अवस्था में ही इतना प्रभाव उत्पन्न करती हैं। उस समय बालक की बुद्धि बड़ी नर्म होती है, उस पर छोटा-सा भी आघात प्रतिक्रिया को उत्पन्न कर देता है। बड़ी अवस्था में बुद्धि कठोर हो जाती है, प्रतिभा अनुभवों के बोझ से दब जाती है और बहुत-सी घटनाएँ जो बालक के हृदय में नई होने के कारण उत्तेजना उत्पन्न करती हैं, प्रौढ़ के हृदय में बार-बार देखी हुई होने के कारण कुछ भी प्रभाव उत्पन्न नहीं करतीं। इस घटना के पीछे मूर्तिपूजा से मूलशंकर की श्रद्धा उठ गई। उसने चाचा और माता की सिफारिश पर पिता से पूजा-पाठ के कार्यों से छुट्टी ले ली और पठन-पाठन में जी लगा दिया। इस समय दो ऐसी घटनाएँ हुईं जिन्होंने मूलशंकर के स्वच्छ दर्पण के समान हृदय पर स्थायी प्रतिबिम्ब छोड़ दिया। उन घटनाओं का वर्णन चरितनायक की अपनी भाषा में ही सुनाना उत्तम होगा। ऋषि ने आत्मचरित में उनका इस प्रकार वर्णन किया है-'मेरी 16 बरस की अवस्था के पीछे मेरी 14 बरस की बहिन थी, उसको हैजा हुआ जिसका वृत्तान्त यों है। एक रात जबकि हम एक मित्र के घर नाच देखने गए हुए थे तब अचानक नौकर ने आकर खबर दी कि उसे हैजा हो गया है। हम सब तत्काल वहाँ से आए। वैद्य बुलाए गये, ओषधि की, मगर कुछ फायदा

www.thearyasamaj.org

न हुआ। चार घण्टों में उसका शरीर छूट गया। मैं उसके बिछौने के पास दीवार से आसरा लेकर खड़ा था। इससे मेरे दिल को बड़ा कष्ट हुआ और मुझे बहुत डर लगा और मारे डर के सोचने लगा कि क्या सारे मनुष्य इसी प्रकार मरेंगे और ऐसे ही मैं भी मर जाऊँगा ? सोच-विचार में पड़ गया कि जितने जीव संसार में हैं उनमें से एक भी न बचेगा ? इससे कुछ ऐसा उपाय करना चाहिये कि जिससे जन्म-मरणरूपी दुःख से वह जीव छूटे और मुक्त हो। अर्थात् इस समय मेरे चित्त में वैराग्य की जड़ लग गई।'

सब लोग रोने लगे, परन्तु वैराग्य की लहर में बहते हुए मूलशंकर की आँख से आँसू न निकले। बालक मूलशंकर रोने की चिन्ता में नहीं था, वह सदा के लिए रोने से बचने का उपाय ढूँढ़ रहा था। इस घटना से मूलशंकर के हृदय में वैराग्य का अंकुर उत्पन्न हो गया।

दूसरी घटना का चरित-नायक ने इस प्रकार वर्णन किया है-'जब मेरी अवस्था 19 वर्ष की हुई तब मुझसे अत्यन्त प्रेम करने वाले जो बड़े धर्मात्मा तथा विद्वान् मेरे चाचा थे, उनको हैजे ने आ घेरा। मरते समय उन्होंने मुझे पास बुलाया। लोग उनकी नाड़ी देखने लगे। मैं भी पास ही बैठा हुआ था। मेरी ओर देखते ही उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। मुझे भी उस समय बहुत रोना आया, यहाँ तक कि रोते-रोते मेरी आँखें फूल गईं। इतना रोना मुझे पहले कभी न आया था। उस दिन मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं भी चाचा जी के सदृश एक दिन मरने वाला हूँ।' तपे हुए लोहे पर चोट लगी। मूलशंकर का हृदय बहिन की मृत्यु के दृश्य से पहले ही नर्म हो चुका था, इस दूसरी चोट ने उसे पूरी तरह वैराग्य की ओर झुका दिया।

शिवलिंग पर चूहों का कूदना हज़ारों लोग देखते हैं, परन्तु उसे एक साधारण घटना समझकर नज़र-अन्दाज़ कर जाते हैं। बहनें और सम्बन्धी किसके नहीं मरते ? परन्तु वैराग्य सबको नहीं होता। छोटी-सी घटना से इतना बड़ा परिणाम निकालना हरेक बुद्धि के लिए सम्भव नहीं है और असाधारण बुद्धि के लिए भी सदा छोटी बात से बड़ा परिणाम निकालना असम्भव है। एक फल को गिरते देखकर पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति का अनुमान सब नहीं कर सकते ; पोप की सवारी न जाने कितने पादरियों ने देखी होगी, परन्तु ईसाई धर्म में सुधार की इच्छा सबके हृदय में उत्पन्न नहीं हुई। विशेष प्रतिभाएँ ही बिन्दु से विश्व का अनुमान कर सकती हैं। परन्तु आश्चर्य यह है कि बहुत प्रचण्ड प्रतिभाएँ भी हरेक विषय में या हर समय एक ही प्रकार से प्रभावित नहीं होतीं। बुद्धदेव ने रोगी या बूढ़ों को देखकर अमर होने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया, परन्तु बहुत-सी भौतिक घटनाएँ देखकर भी वैज्ञानिक परीक्षण आरम्भ नहीं किये। न्यूटन ने छोटी-सी बात से विज्ञान के बड़े-बड़े सिद्धान्त निकाल लिये, परन्तु बूढ़ों या मरतों को देखकर वैराग्यवान् नहीं हुए। यह विचित्रता पूर्व-जन्म के संस्कारों को सिद्ध करती है। पूर्व-संस्कार और अद्भुत प्रतिभा ये दोनों मिलकर संसार में आश्चर्यजनक कार्य कर सकते हैं। भगवान् के अभीष्ट बड़े-बड़े कार्य इन्हीं दो शक्तियों के मेल से हो सकते हैं। मूलशंकर में भी इन दोनों का समावेश था।

मूलशंकर के हृदय में यह विचार उत्पन्न होने लगा कि 'मुझे भी कभी मरना पड़ेगा। क्या इससे किसी प्रकार बच सकता हूँ ?' वह विद्वानों और वृद्धों से अमर होने के उपाय पूछने लगा। जब उसके माता-पिता को यह पता लगा तो वे उसे बाँधने के लिए विवाह कर देने का संकल्प दृढ़ करने लगे। विचारों का द्वन्द्व-युद्ध होने लगा। मूलशंकर ने इस कारागार से बचने के लिए कभी काशी जी जाने का प्रस्ताव किया और कभी पड़ोस में विद्याभ्यास समाप्त करने की बात उठाई। उसके माता-पिता वैराग्य से बहुत डरते थे, इस कारण उनकी ओर से विवाह की शीघ्रता होने लगी। ऐसी दशाओं में माता-पिता अपनी अधीरता से प्रायः अपना काम बिगाड़ लिया करते हैं। वे छूटने का यत्न करने वाली सन्तान को यथाशीघ्र बाँधने का यत्न करते हैं। यह अधीरता प्रायः दुःखान्त सिद्ध होती है। मूलशंकर के माता-पिता ने भी अपनी अधीरता से बिगड़ते काम को शीघ्र से शीघ्रतर बिगाड़ दिया।

अमृत की तलाश

मूलशंकर के जीवन में यह समय विषम परीक्षा का था। वह एक पहाड़ की ऐसी चोटी पर खड़ा था, जिसके एक ओर नीचे उतरने की शाही सड़क बनी हुई थी और दूसरी ओर जिस चोटी पर वह खड़ा था उससे भी अधिक ऊँची चोटियाँ दिखाई दे रही थीं। बीहड़ जंगल था, कँटीली पगडंडियाँ थीं और नुकीले पत्थर थे। शाही सड़क पर होकर नीचे उतर आना बहुत सुगम था, परंतु दूसरी ओर जाना जान को खतरे में डालना था। सरल मार्ग मृत्यु-लोक को आता है, उस पर अनगिनत प्राणी बड़ी सरलता से चले जा रहे हैं। दुर्गम मार्ग कहाँ का है ? क्या वह अमर लोक का मार्ग है ?-कह नहीं सकते। कई लोग उस मार्ग पर चलना आरंभ करके ऐसी उलझनों में फँसे कि न इधर के ही रहे, न उधर के ही हुए। बहुत-से लोग बीहड़ जंगल में

www.thearyasamaj.org

कुछ कदम चलकर यह कहते हुए लौट आए कि 'बस, जाने दो, यह सब ढोंग है।' राजमार्ग का उद्देश्य निश्चित है, दूसरी ओर जाना अँधेरे में कूदने के समान है। विश्वासी जीव कहते हैं कि दूसरी ओर की चोटियों पर अमरलोक है, परन्तु वह किसी ने देखा नहीं। उद्देश्य संदिग्ध-मार्ग विकट ! क्या इससे अधिक विषम समस्या भी हो सकती है ?

परन्तु मूलशंकर को इस विषय दशा में अधिक भटकना नहीं पड़ा। उसने इस प्रकार विचार किया, ''एक ओर राजमार्ग है, वह मृत्यु का रास्ता है। यह निश्चित है। वह मार्ग नीचे की ओर जाता है, यह भी निश्चित है। इस कारण वह हेय है। दूसरी ओर अमरता की सम्भावना है। नाश के निश्चय से बचाव की सम्भावना बहुत अच्छी है।'' यह सोचकर मूलशंकर ने निश्चित मृत्यु की ओर ले-जाने वाले राजमार्ग का एकदम त्याग कर दिया और सम्भावित अमरपद की तलाश के लिए कमर कस ली। विवाह का झंझट देखकर उसने समझ लिया कि इस संसार का तिलिस्मी द्वार खुल गया है। यह तिलिस्मी द्वार हरेक युवा और युवती को अपनी ओर बड़े वेग से खींचता है। जहाँ द्वार के अन्दर पाँव धरा कि पीछे के किवाड़ स्वयं बन्द हो जाते हैं। पीछे लौटने के लिए सीधा रास्ता बिल्कुल बन्द हो जाता है। दयानन्द ने देखा कि द्वार खुल गया है ! उसमें एक पग रखने की देर है। द्वार बन्द होते ही अमरलोक एक हल्का-सा सपना रह जायेगा-पैर जंजीरों में बँध जायेंगे।

अमृत के प्यासे मूलशंकर ने प्रेममय घर और सरल राजमार्ग को लात मारकर 21 वर्ष की आयु में बीहड़ वन का रास्ता लिया। वह ज्येष्ठ मास की एक साँझ को घर से भाग खड़ा हुआ।

मूलशंकर 1902 विक्रमी के ज्येष्ठ मास में घर से बाहर हुआ और 1917 विक्रमी के कार्तिक मास में दण्डी जी के पास मथुरा में पहुँचा। बीच के इन 15 वर्षों में उसने एक सच्चे जिज्ञासु का जीवन व्यतीत किया। घर से सम्बन्ध तोड़ दिया। घर छोड़ने के कुछ मास बाद केवल एक बार सिद्धपुर के मेले में एक वैरागी पुत्र का समाचार पाकर मूलशंकर के पिता ने उसे आ पकड़ा था। जब पिता ने कई सिपाहियों के साथ आकर पकड़ लिया तब पिता के चरणों में सिर झुकाने के सिवा क्या चारा था ? पिता सिपाहियों के पहरे में रखकर मूलशंकर को घर की ओर वापस ले चले, परन्तु जिसे धुन समाई थी वह अब कैद में फँसने वाला न था। रात के समय सिपाहियों को सोते देख मूलशंकर फिर भाग निकला। दूसरा सारा दिन उसने एक बड़े पेड़ पर छिपकर बिताया। पिता ऐसे बेमुरौवत पुत्र से निराश होकर घर वापस चले गये, और मूलशंकर ने अपना रास्ता लिया। इसके पश्चात् मूलशंकर का घर वालों से कभी साक्षात्कार नहीं हुआ।

मूलशंकर को एक ही धुन थी कि मृत्यु से छूटने का उपाय जाना जाए। उसे बताया गया था कि मृत्यु से छूटने का उपाय 'योग' है। मूलशंकर योगी की तलाश में शहर, गाँव और जंगल में भ्रमण करने लगा। पहले-पहल तो नया होने के कारण उसे ठग-साधुओं ने खूब लूटा। ठग ने रेशमी वस्त्र धरा लिये, परन्तु धीरे-धीरे कुछ विवेक होता गया और वह जिज्ञासु ठगों और सन्तों में भेद करने लगा। घर से भागने पर पहला काम मूलशंकर ने यह किया था कि सामने नामक ग्राम में एक ब्रह्मचारी की प्रेरणा से दीक्षा लेकर अपना नाम 'शुद्धचेतन ब्रह्मचारी' रखा। बहुत समय तक जिज्ञासु ने ब्रह्मचारी रहकर भ्रमण किया, परन्तु ब्रह्मचारी को उस समय गुजरात में संन्यासियों की भाँति बना-बनाया भोजन नहीं मिलता था, हाथ से बनाना पड़ता था। इससे शुद्धचेतन के पठन-पाठन में बहुत विघ्न होता था। उसने कई संन्यासियों से संन्यास लेने का यत्न किया परन्तु थोड़ी आयु देखकर वे लोग संकोच करते रहे। नर्मदा नदी के तट पर घूमते हुए उन्हें पूर्णानन्द सरस्वती नाम के विद्वान् साधु के दर्शन करने का अवसर मिला। उससे भी शुद्धचेतन ने संन्यास देने की प्रार्थना की। पहले तो उन्होंने कुछ संकोच किया, परन्तु और साधुओं की सिफारिश आने पर संन्यास देना स्वीकार कर लिया। तब पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास लेकर शुद्धचेतन स्वामी दयानन्द सरस्वती बन गया।

घर से निकलकर कुछ समय तक स्वामी दयानन्द ने गुजरात में ही भ्रमण किया। वहाँ से बड़ौदा होते हुए चेतनमठ होकर नर्मदा के तट पर चिरकाल तक भिन्न-भिन्न स्थानों में निवास किया। नर्मदा-तट से आबू ठहरकर सं. 1912 के कुम्भ पर स्वामी दयानन्द हरिद्वार आये और वहाँ के मठों पर महन्तों की माया का पहली बार दिग्दर्शन किया। हरिद्वार से आप हिमालय की ओर चल दिये और सच्चे योगी की तलाश में कठिन से कठिन चोटियों पर चढ़कर, गुफाओं में घुसकर और चोटियाँ पार करके सच्चे जिज्ञासु होने का परिचय दिया।

इस भ्रमण में दयानन्द ने कई सच्चे और झूठे योगियों के दर्शन किये। झूठे योगियों से उन्हें घृणा उत्पन्न हो जाती थी और सच्चे योगियों से वह कुछ-न-कुछ सीख ही लिया करते थे। चाणोद कल्याणी में वास करते हुए आपका योगानन्द नाम

www.thearyasamaj.org

के एक योगी से परिचय हुआ। देर तक स्वामी ने उनसे योग की क्रियाएँ सीखीं। अहमदाबाद में दो और योगियों से उन्हें योगविद्या सीखने का अवसर मिला था। इस प्रकार मिले हुए अवसरों से जिज्ञासु ने पूरा लाभ उठाया।

हरिद्वार से टिहरी राज्य की ओर जाते हुए स्वामी जी को तन्त्र-ग्रन्थ देखने का अवसर मिला। उन ग्रन्थों को देखकर आपके चित्त में इतनी घृणा हुई कि वह फिर अनेक कई व्याख्यायें सुनकर भी दूर नहीं हुई। टिहरी से विद्या और योग की धुन में मस्त स्वामी ने केदारघाट, रुद्रप्रयाग, सिद्धाश्रम आदि का भ्रमण करते हुए मठों और मन्दिरों की दुर्दशा को अच्छी तरह देखा। तुंगनाथ की चोटी पर चढ़ते हुए उन्हें आशा थी कि ऊपर कुछ अच्छा दृश्य देखने को मिलेगा ; वहाँ पहुँचकर भी देखा तो वैसा ही मन्दिर, वैसे ही पुजारी-सब लीला मैदान जैसी ही थी। गुप्त काशी का दौरा लगाकर श्री दयानन्द सरस्वती ओखीमठ पहुँचे। ओखीमठ हिमालय का प्रसिद्ध मठ है। वहाँ की गुफाओं में जिसासु और सच्चे महात्माओं की बहुत तलाश की, परन्तु वहाँ भी चरस और सुल्फे के धुएँ से सब-कुछ आच्छन्न ही दिखाई दिया।

यहाँ के एक महन्त ने स्वामी जी से बातचीत करके यह संकल्प किया कि उन्हें अपना मुख्य चेला बनाकर उत्तराधिकारी बनाये। ऐसा भव्य और पठित शिष्य उसे कहाँ मिलता ? उसने अपना भाव दयानन्द के सामने प्रकाशित किया और यह भी बताया कि मठ के साथ द्रव्य की राशि भी कुछ कम नहीं है। दयानन्द ने उत्तर दिया कि 'यदि मुझे धन की अभिलाषा होती तो मैं अपने बाप की सम्पत्ति को, जो तुम्हारे इस माल और दौलत से कहीं बढ़कर थी, न छोड़ता।' फिर भी दयानन्द ने कहा कि 'जिस उद्देश्य से मैंने घर छोड़ा और सांसारिक ऐश्वर्य से मुँह मोड़ा, न तुम उसके लिए यत्न कर रहे हो और न तुम्हें उसका ज्ञान है। फिर तुम्हारे पास मेरा रहना किस प्रकार सम्भव है !' यह सुनकर महन्त ने पूछा कि 'वह कौन-सी वस्तु है जिसकी तुम्हें खोज है और तुम इतना परिश्रम उठा रहे हो ?' दयानन्द ने उत्तर दिया कि 'मैं सत्य योगविद्या और मोक्ष की खोज में हूँ और जब तक यह प्राप्त न होंगे, तब तक बराबर देशवासियों की सेवा करता रहूँगा।'

मठ के महन्त के पास धन था, ऐश्वर्य था, परन्तु न सत्य था, न योग था और न मोक्ष का उपाय था। इस कारण वह जिज्ञासु दयानन्द को न बाँध सका। ओखी मठ से जोशी मठ होते हुए आप बदरीनारायण गये। आपने सुन रखा था कि बदरीनारायण के आसपास योगी रहा करते हैं। बदरीनारायण को योगियों से बिल्कुल शून्य पाकर योग के अभिलाषी दयानन्द ने आसपास की चोटियों और गुफाओं में खोज करने का संकल्प किया। चारों ओर बर्फ पड़ी हुई थी। पहाड़ियों का पानी नुकीले पत्थरों में से होकर बहता हुआ रास्तों को रोक रहा था। दयानन्द ने इन कठिनाइयों की परवाह न करते हुए खोज जारी रखी। घूमते-घूमते आप अलकनन्दा नदी के किनारे पहुँचे और उसे पार करने के लिए पानी में घुस गये। इसी नदी में किसी-किसी ठिकाने घुटने तक जल था, और कहीं-कहीं गहराई बहुत अधिक थी। चौड़ाई कोई 10 हाथ के लगभग होगी। पानी बर्फ के समान ठण्डा था और बीच-बीच में नोकदार पत्थर और बर्फ के टुकड़े भी बिखरे हुए थे। शरीर पर कपड़ा बहुत हल्का था और पाँव बिल्कुल नंगे थे। स्वामी दयानन्द की दशा बहुत ही शोचनीय हो गई। पानी के अन्दर कुछ समय के लिए तो बिल्कुल मूर्च्छित से हो गये, परन्तु धैर्य से अपने-आपको बचाये रखा। किसी प्रकार पार तो हुए पर एक ओर सर्दी, दूसरी ओर भूख। पाँव पत्थरों से छिल गये थे और लहू जारी हो गया था। आगे जाने की हिम्मत न रही-परन्तु वहाँ ठहरकर रात बिताने में भी मृत्यु का सामना था। उस समय परमात्मा की कृपा से भक्त को सहायता मिली। दो पहाड़ी राही ऊपर आ निकले। यद्यपि वे पहाड़ी दयानन्द को साथ न ले-जा सके, तो भी कुछ ढाढस बँध गया। थोड़ी देर सुस्ताकर स्वामी जी उठ खड़े हुए और वसुधा तीर्थ पर कुछ विश्राम करके बदरीनारायण को लौट गये।

बदरीनारायण के आसपास योगी के दर्शन करने की अभिलाषा में निराश होकर जिज्ञासु ने स्थल की ओर मुँह मोड़ा। रामपुर, द्रोणसागर और मुरादाबाद होते हुए आप गढ़मुक्तेश्वर पहुँच गये। गंगा के किनारे घूम रहे थे। प्रवाह में बहता हुआ एक मुर्दा उन्हें दिखाई दिया। दयानन्द ने 'हठयोग प्रदीपिका' आदि में शरीर के आभ्यन्तर अंगों के सम्बन्ध में बहुत-कुछ पढ़ रखा था। उनके सत्यासत्य निर्णय का उचित अवसर जानकर आप पानी में कूद पड़े और मुर्दे को किनारे पर खींच लिया। लाश किनारे पर रखकर चाकू से चीर-फाड़ की तो उन ग्रन्थों में लिखे हुए शरीर-वर्णन को बहुत अशुद्ध पाया। असत्य से भरे हुए ग्रन्थों का बोझ उठाने से कोई लाभ न देखकर दयानन्द ने उन सबको फाड़कर गंगा-प्रवाह के अर्पण कर दिया। गंगा-तट का भ्रमण करके स्वामी जी दक्षिण की ओर जा निकले और बहुत दिनों तक नर्मदा के तट पर घूमते रहे। वहाँ बड़े-बड़े घने जंगल हैं। एक जंगल में आपका एक

बड़े भालू से सामना हो गया। भालू को देखकर वह डरे नहीं, प्रत्युत अपना सोटा उठाकर उसकी ओर को बढ़ाया। सोटे से डरकर चिंघाड़ता हुआ वह भालू जंगल में भाग गया। अँधेरे में कहीं ठहरने का स्थान ढूँढ़ते-ढूँढ़ते जंगल में कुछ कुटियाँ दिखाई दीं। पास जाने पर कोई जागता हुआ प्राणी न मिला। तब सारी रात आपने एक वृक्ष पर बैठकर गुजारी। प्रातः काल जब ग्रामवासियों ने एक संन्यासी को देखा तो रात के कष्ट के लिए बहुत क्षमा माँगी और उचित आदर-सत्कार किया।

नर्मदा के तट पर दयानन्द ने लगभग तीन वर्ष भ्रमण किया। भ्रमण में आपने सुना कि मथुरा में एक योगी और दण्डी विद्वान् रहते हैं। योग और विद्या के अभिलाषी ने यह समाचार सुनते ही मथुरा की ओर मुँह मोड़ा और कार्तिक सुदी 2 सम्वत् 1917, तदनुसार 14 नवम्बर 1860 के दिन मथुरा में स्वामी विरजानन्द जी का दरवाजा जा खटखटाया।

पन्द्रह वर्षों तक जिज्ञासु दयानन्द ने पहाड़ों और मैदानों को नाप डाला, इतने शारीरिक कष्ट सहे और तपश्चर्या की-यह सब किस लिए ? सत्य-योग और मोक्ष की प्राप्ति के लिए। परन्तु न हिमालय की सर्दी में दिल की आग बुझी और न गंगा व नर्मदा के जलों ने ज्वाला को शान्त किया। जिज्ञासु अब दण्डी स्वामी के द्वार पर विद्या के स्रोत में हृदय का ताप बुझाने पहुँचता है। चलो पाठक ! देखें कि उसे कहाँ तक सफलता प्राप्त होती है।

विद्या के स्रोत में स्नान

यह स्वामी विरजानन्द जी कौन हैं ? पंजाब में कर्तारपुर के समीप गंगापुर नाम का एक ग्राम था। उसमें नारायणदत्त नाम का सारस्वत ब्राह्मण रहता था। दयानन्द के गुरु श्री विरजानन्द दण्डी ने उसी के घर जन्म लिया था। बचपन से ही बालक पर आपत्तियों का आक्रमण आरम्भ हुआ। 5 वर्ष की आयु में चेचक ने चाम की आँखें शक्तिहीन कर दीं और 11वें वर्ष में बालक के माता-पिता होनहार बच्चे को अनाथ छोड़कर परलोक सिधार गये। बालक के पालन-पोषण का बोझ बड़े भाई के कन्धों पर पड़ा। बड़ा भाई साधारण दुनियादार भाइयों की भाँति नासमझ था। वह एक अन्धे अतएव अनुपयोगी भाई की पेट-पालना में कोई विशेष लाभ नहीं देखता था। भाई और भावज की कृपा से तंग आकर शीघ्र ही बालक को घर छोड़ना पड़ा।

घर से भागकर प्रतिभाशाली युवक ऋषिकेश और हरिद्वार पहुँचा और वर्षों तक विद्याध्ययन तथा तपश्चर्या द्वारा अपनी आत्मा को संस्कृत करता रहा। हरिद्वार में ही स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती की दया से उसे संन्यास मिला। संन्यासी विरजानन्द विद्या की तलाश में हरिद्वार, कनखल, काशी, गया आदि में चिरकाल तक घूमते रहे और विद्वानों से व्याकरण तथा अन्य शास्त्रों का अध्ययन करते रहे। अमृत के प्यासे ऋषि दयानन्द के गुरु बनने का अधिकार उसी तपस्वी को हो सकता था, जिसने एक उद्देश्य के लिए तपस्या की हो, किसी उत्तम पदार्थ की खोज में कोने-कोने छान मारे हों। इस दृष्टि से देखें तो स्वामी विरजानन्द जी दयानन्द के गुरु बनने के पूर्णतया अधिकारी थे।

विद्याध्ययन कर लेने पर दण्डी जी ने विद्यार्थियों को पढ़ाना आरम्भ किया। उनके यश का विस्तार चारों ओर होने लगा ; विशेषकर व्याकरण में उनका पाण्डित्य बहुत ऊँचे दर्जे का समझा जाता था। उनके पाण्डित्य और मधुर श्लोक-गान से प्रसन्न होकर अलवर के राजा ने कुछ दिनों तक उन्हें अपने यहाँ रखा। राजा की प्रार्थना पर दण्डी जी यह शर्त करके अलवर गये थे कि प्रतिदिन राजा 3 घण्टे तक अध्ययन किया करेगा। विलासी राजा अपने प्रण को निभा न सका, परन्तु संन्यासी ने अपना प्रण निभाया। जिस दिन राजा पढ़ने नहीं आया, उससे अगले दिन दण्डी जी का आसन अलवर से उठ गया।

कुछ समय रजवाड़ों में बिताकर स्वामी विरजानन्द जी ने मथुरा में अपना आसन जमाया। व्याकरण पढ़ने की इच्छा रखने वाले विद्यार्थी दूर देशों से-यहाँ तक कि काशी से भी-दण्डी जी के पास आते थे। व्याकरण में दण्डी जी का पाण्डित्य अपूर्व हो गया था। इस समय उनके जीवन में एक विशेष परिवर्तन करने वाली घटना घटित हुई। पड़ोस में एक दक्षिणी पण्डित रहता था। वह प्रतिदिन मूल अष्टाध्यायी का पाठ किया करता था। दण्डी जी उस समय तक सिद्धान्त कौमुदी, मनोरमा और शेखकर को ही व्याकरण का आदि और अन्त समझते थे। मूल अष्टाध्यायी का पाठ सुनकर मानो उनकी आँखें खुल गईं। उन्हें प्रतीत हुआ कि व्याकरण का ऋषि-निर्णीत क्रम कुछ और ही है। अष्टाध्यायी के सूत्र-क्रम को देखते ही उनके हृदय में धारणा हो गई कि कौमुदीकार का बनाया हुआ क्रम अस्वाभाविक है और अष्टाध्यायी के महत्त्व को कम करने वाला है। यह धारणा होते ही दण्डी जी ने दीक्षित के ग्रन्थों का और उनके साथ ही अन्य सब अर्वाचीन व्याकरण-ग्रन्थों का त्याग कर दिया। जनश्रुति है कि उनका यमुना में प्रवाह कर दिया। अष्टाध्यायी का क्रम दण्डी जी को इतना पसन्द आया कि उन्होंने अपने शिष्यों के पास जितने अर्वाचीन ग्रन्थ थे, वे सब फिंकवा या जलवा दिये।

www.thearyasamaj.org

अष्टाध्यायी और महाभाष्य इन दो को हृदय के आसन पर बिठा लिया।

क्रिया-प्रतिक्रिया का सिद्धान्त संसार में सभी जगह पाया जाता है। पानी एक ओर को बह रहा है। सामने पहाड़ की भारी चट्टान आ जाती है। पानी उल्टे पाँव भागता है। उसके उल्टे भागने का वेग आगे बढ़ने के वेग के अनुपात से होगा। यदि पानी धीमी गति से आगे बढ़ रहा था तो धीमी चाल से ही पीछे को लौटेगा, परन्तु यदि जल का प्रवाह वेगवान् हो तो उल्टी ठोकर भी जोर की लगेगी। दण्डी जी के विचार-प्रवाह में भी जोर की ठोकर लगी। वह कौमुदी, मनोरमा और शेखकर के प्रवाह में बड़े वेग से बहे जा रहे थे। अष्टाध्यायी का मूल सूत्र-क्रम सुनकर और उसका सरल सौन्दर्य देखकर प्रज्ञाचक्षु की आँखें खुल गईं। उन्हें भान होने लगा कि ऋषि-कृत व्याकरण का क्रम कौमुदी के घड़े हुए क्रम से बहुत उत्कृष्ट है। इतना उत्तम होते हुए भी सूत्र-क्रम गुम क्यों हो गया ? कारण यही प्रतीत होता था कि भट्टोजिदीक्षित ने 'सिद्धान्त कौमुदी' बनाकर सूत्र-क्रम को पीछे फेंक दिया। इससे दण्डी जी का सारा असन्तोष भट्टोजिदीक्षित पर केन्द्रित हो गया। अष्टाध्यायी और महाभाष्य से उनका प्रेम ज्यों-ज्यों बढ़ता जाता था, भट्टोजिदीक्षित से त्यों-त्यों उन्हें घृणा होती जाती थी।

धीरे-धीरे उनके हृदय में यह निश्चय-सा हो गया कि जब तक कौमुदी और उससे सम्बन्ध रखने वाले ग्रन्थों का प्रचार नहीं रुक जाता, तब तक व्याकरण की ऋषि-कृत पद्धति का उद्धार नहीं हो सकता। यह विचार दण्डी जी के मन में समा गया, उनके दिल पर सवार हो गया। यही विचार दिन का चिन्तन और रात का सपना हो गया। एक बार जयपुर के राजा रामसिंह ने दण्डी जी को दरबार में बुलाकर अपने यशस्वी होने का उपाय पूछा। ऋषि-कृत ग्रन्थों के भक्त दण्डी जी ने उत्तर में यह आदेश किया कि एक बड़ी सभा करके देशभर के विद्वानों को एकत्र करो। सभा में इस विषय पर शास्त्रार्थ हो कि व्याकरण का ऋषि-कृत क्रम अच्छा है या कौमुदी का ? दण्डी जी ने कहा कि मैं उस सभा में सिद्ध करके दिखा दूँगा कि ऋषि-कृत क्रम ठीक है और कौमुदी आदि ग्रन्थ अशुद्धियों से भरपूर हैं। दूसरे एक अवसर पर मथुरा के कलेक्टर मि. पोस्टली दण्डी जी से मिलने आये। मि. पोस्टली ने सभ्यता के तौर पर पूछा कि 'आप क्या चाहते हैं, जो हम कर सकें ?' दण्डी जी ने उत्तर दिया कि 'यदि आप हमारी इच्छा पूरी करना चाहते हैं तो भट्टोजिदीक्षित. के सब ग्रन्थों को इकट्ठा करके जलवा दें।' यह भी प्रसिद्ध है कि दण्डी जी दीक्षित के ग्रन्थों पर शिष्यों के हाथों से जूते लगवाया करते थे।

क्या यह उचित था ?--अष्टाध्यायी या कौमुदी के सम्बन्ध में स्वतन्त्र सम्मति रखना दण्डी जी के लिए सर्वथा उचित था। यह उनका अधिकार था। ग्रन्थों की उपयोगिता तथा अनुपयोगिता के विषय में स्वतन्त्र सम्मति रखने का विद्वानों को पूरा अधिकार है। हम यह भी नहीं कह सकते कि उनकी सम्मति निर्मूल थी। अष्टाध्यायी की पद्धति का निर्माण पाणिनि मुनि ने किया है। सूत्रों का क्रम अष्टाध्यायी का जीवन है। यदि क्रम की उपेक्षा कर दी जाय तो सूत्र व्यर्थ है। अनुवृत्ति असम्भव हो जाती है, 'विप्रतिषेधे परं कार्यं' बिल्कुल व्यर्थ हो जाता है और 'पूर्वत्राऽसिद्धम्' का कुछ बल ही नहीं रहता। अष्टाध्यायी के सूत्रों का इतना लघु-काय होना क्रम पर ही आश्रित है। उसका सौन्दर्य, उसका गौरव, बहुत-कुछ क्रम पर अवलम्बित है। क्रम को छोड़कर यदि सूत्रों को कार्य में लाया जाय, तो अनुवृत्ति के लिए स्मृति पर बोझ डालना पड़ता है, 'परं कार्यं' और 'असिद्धि' का तो अनुमान-मात्र ही लगाया जा सकता है। यह कहा जा सकता है कि जो आदमी संस्कृत व्याकरण का विद्वान् बनना चाहे, वह यदि 'सिद्धान्त कौमुदी' को साद्यन्त पढ़ जाय, तो भी सूत्रक्रम से परिचित हुए बिना वह सफलता प्राप्त नहीं कर सकेगा। अष्टाध्यायी और उनके सूत्रों के क्रम का अटूट सम्बन्ध है।

मुनि विरजानन्द ने देखा कि लोग 'सिद्धान्त कौमुदी' को पढ़कर सूत्र-क्रम की उपेक्षा करते हैं। भट्टोजिदीक्षित के देखने में सरल परन्तु वस्तुतः दुर्गम ग्रन्थ ने ऋषि-कृत व्याकरण का लोप कर दिया है। उनकी अन्तरात्मा इससे खिन्न होकर प्रचलित पद्धति के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए खड़ी हो गई। विद्रोह के समय प्रायः सीमा का उल्लंघन हो जाता है। दण्डी जी के क्षोभ ने भी जब उग्र रूप धारण किया तब मर्यादा का अतिक्रमण कर दिया, इसमें सन्देह नहीं। ग्रन्थ को नदी में बहाने से कभी उसका लोप नहीं हुआ और न कभी जूतों या पाँव के तले रौंदने से उसका प्रचार रुका है। परिणाम प्रायः उल्टा ही होता है। आज भारतभूमि में सिद्धान्त कौमुदी की छपी हुई प्रतियाँ दण्डी जी के समय की अपेक्षा बहुत अधिक हैं, परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि दण्डी जी का यत्न व्यर्थ गया। जिस सत्य का अनुभव उन्होंने किया और अपने शिष्यों को कराया, उसे देश के बड़े भाग ने अंगीकार कर लिया है। आज सूत्र-क्रम पर श्रद्धा रखने वाले विद्वानों की संख्या और मूल अष्टाध्यायी को प्रकाशित

www.thearyasamaj.org

प्रतियों की संख्या भी दण्डी जी के समय से बहुत अधिक है। सत्य ने अपना प्रभाव पैदा किया है। उसकी सहायता में यदि कहीं सीमा का उल्लंघन हो गया था तो वह फल का महत्त्व देखते हुए अब विस्मरण करने योग्य है। जहाँ एक ओर उसका अनुकरण बिल्कुल त्याज्य है, वहाँ दूसरी ओर बारम्बार उसे दोहराकर शिकायत करना बुद्धिमत्ता में शामिल नहीं है।

अस्तु, ऐसे दण्डी विरजानन्द जी थे, जिनके द्वार पर कार्तिक सुदी 2 सम्वत् 1917 (14 नवम्बर 1860) के दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जाकर आवाज दी। परिचय हो जाने पर दण्डी जी ने पूछा कि 'क्या कुछ व्याकरण पढ़ा है ?' दयानन्द ने उत्तर दिया कि सारस्वत पढ़ा हूँ। इस पर आज्ञा हुई कि पहले सब अनार्ष ग्रन्थ यमुना में बहा आओ, तब आर्ष ग्रन्थ पढ़ने के अधिकारी हो सकोगे। दयानन्द ने आज्ञा का पालन किया और योग्य गुरु के चरणों में बैठकर विद्यामृत-पान का यत्न आरम्भ किया।

स्वामी जी का विद्यार्थी-जीवन अनुकरणीय था। प्रातः काल उठकर नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर पहले गुरु के लिए नदी से जल लाते थे, फिर अपने सन्ध्योपासन के पीछे पढ़ने में लग जाते थे। प्रातः काल कुछ चने चबा लेते थे, जो उन्हें दुर्गा खत्री की कृपा से प्राप्त होते थे। मथुरा के बहुत-से विद्यार्थियों के भोजन का प्रबन्ध बाबा अमरलाल जोशी की ओर से था; स्वामी जी के भोजन का प्रबन्ध भी वहीं पर था। रात्रि में भी सोने से पहले वह कुछ-न-कुछ अभ्यास किया करते थे, जिसके लिए तेल का मासिक खर्च चार आने लाला गोवर्धन सर्राफ से प्राप्त होता था। इसी प्रकार उदार महानुभावों की सहायता से आवश्यकताएँ पूरी हो जाती थीं, और शिष्य को गुरु-सेवा करते हुए विद्याध्ययन करने का खुला अवसर मिलता था।

दण्डी जी का स्वभाग उग्र था। कभी-कभी बहुत नाराज हो जाते थे। शिष्यों के हाथ पर लाठी भी जमा देते थे। एक बार स्वामी जी की भी बारी आ गई। कहते हैं कि कि लाठी की उस चोट का निशान स्वामी जी के हाथ पर मरण-पर्यन्त बना रहा जिसे देखकर वह गुरु के उपकारों का स्मरण किया करते थे। एक बार छोटे-से अपराध पर ड्योढ़ी बन्द कर दी गई। तब योग्य शिष्य ने दो हितैषियों से सिफारिश कराई। सिफारिश से सन्तुष्ट होकर गुरु ने शिष्य को क्षमा कर दिया।

स्वामी दयानन्द का जीवन पूरे यति का जीवन था। जिस दिन से वह जिज्ञासु बने, उस दिन से मन, वाणी और कर्म से ब्रह्मचारी रहने का कठोर व्रत धारण किया। विद्यार्थी-जीवन में दयानन्द ने पूर्ण ब्रह्मचारी रहने का उद्योग किया। एक दिन की घटना है कि आप नदी के तट पर सन्ध्या कर रहे थे। ध्यान खुला तो क्या देखते हैं कि एक युवती चरणों का स्पर्श कर रही है। चरणस्पर्श भक्ति से था, परन्तु पूर्ण ब्रह्मचारी ने उतने स्त्री-स्पर्श को भी पाप समझा और कई दिनों तक एकान्त में जाकर निराहार व्रत द्वारा हृदय को शुद्ध किया।

दण्डी जी से स्वामी ने अष्टाध्यायी, महाभाष्य आदि व्याकरण ग्रन्थों के अतिरिक्ति अन्य आर्ष ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। इससे यह न समझना चाहिए कि आपने गुरु से केवल ग्रन्थों की विद्या ही प्राप्त की ; उस ग्रन्थ-विद्या से कहीं बढ़कर वे भाव थे, जो उन्हें गुरु से प्राप्त हुए। आधुनिक या अर्वाचीन ग्रन्थों को छोड़कर प्राचीन आर्ष ग्रन्थों में श्रद्धा, मूर्ति-पूजा आदि कुरीतियों से वैराग्य और कठोर संयम-इन सबके लिए योगी दयानन्द गुरु का आभारी था।

विद्याध्ययन समाप्त हुआ। रीति के अनुसार शिष्य कुछ लौगों की भेंट लेकर गुरु के चरणों में उपस्थित हुआ और निवेदन करने लगा कि महाराज, मेरे पास और कुछ नहीं है जो भेंट करूँ, इस कारण केवल आध सेर लौंग लेकर उपस्थित हुआ हूँ। गुरु ने कहा-"मैं तुझसे ऐसी चीज माँगूँगा जो तेरे पास उपस्थित है।" दयानन्द के बद्धाञ्जलि होने पर गुरु ने आदेश किया-(बड़े दुःख की बात है कि गुरु के उस समय के शब्द यथार्थ रूप में प्राप्त नहीं होते। जीवनचरित लिखने वालों ने दण्डी जी के वाक्य अपनी-अपनी रुचि के अनुसार घड़े हैं। पं. लेखराम जी के सम्पादित किये जीवन-चरित में जो शब्द दिये गये हैं वे बहुत-कुछ स्वाभाविक हैं। यह कहा जा सकता है कि यदि दण्डी जी ने ठीक वे शब्द नहीं कहे थे तो कम-से-कम भावार्थ वही होगा। वहाँ दण्डी जी के निम्नलिखित शब्द दिये गये हैं-)

"देश का उपकार करो ! सत् शास्त्रों का उद्धार करो ! मत-मतांतरों की अविद्या को मिटाओ और वैदिक धर्म फैलाओ!" दयानन्द ने आदेश को अंगीकार किया। अन्त में आशीर्वाद देते हुए दण्डी जी ने और भी कहा-'मनुष्य-कृत ग्रन्थों में परमेश्वर और ऋषियों की निन्दा है और ऋषिकृत ग्रन्थों में नहीं, इस कसौटी को हाथ से न छोड़ना !'

इस अमूल्य उपदेश को शिरोधार्य करके श्री दयानन्द संन्यासी गुरु के द्वार से विदा हुए। जो वस्तु पर्वत की चोटी पर, वन की गहराई में, नदियों के प्रवाह में, और महन्तों के डेरों में

www.thearyasamaj.org

ढूँढ़ी, पर न मिली, वह अमृत के प्यारे दयानन्द को मथुरापुरी में दण्डी विरजानन्द के चरणों में मिली। वह वस्तु विद्या और विवेक-बुद्धि थी। उस वस्तु को पाकर, ब्रह्मचर्य के तेज से तेजस्वी ब्रह्मचारी संसार-क्षेत्र में प्रवेश करता है।

खाण्डव वन

जिस समय गुरु से आशीर्वाद लेकर दयानन्द ने कार्य-क्षेत्र में पाँव धरा, आर्य जाति की दशा उस समय मुक्त कण्ठ से चिल्ला-चिल्ला कर कह रही थी कि मुझे एक वैद्य की आवश्यकता है। भारत देश अज्ञान, पराधीनता, शत्रु और दुःखों के कारण सर्पों और काँटेदार झाड़ियों से भरे हुए खाण्डव वन के समान दुर्गम और बीहड़ हो रहा था। उसे आवश्यकता थी एक अर्जुन की, जो एक ओर अरणियों की रगड़ से आग निकालकर दावानल को प्रज्वलित करे और दूसरी ओर आग बुझाने का यत्न करने वाले देवों और असुरों के आक्रमणों का उत्तर दे सके। आर्य जाति की दुर्दशा उस समय एक सुधारक को बुला रही थी, एक ऐसे परखैय्ये को बुला रही थी जो उसके पीड़ित अंगों पर शान्ति देने वाला हाथ रख सके। इस परिच्छेद में हम देखेंगे कि उस दुर्दशा का क्या इतिहास और स्वरूप था। अगला सम्पूर्ण भाग, ऋषि दयानन्द ने उस दुर्दशा को सुधारने का जो यत्न किया, उसके अर्पण किया जाएगा।

बहुत पहले-ऐतिहासिक काल से पहले, वेद और प्रधानतया वैदिक साहित्य केवल भारत की सीमाओं में परिमित हो चुका था। जो लोग ईरान में बसे या ग्रीस में पहुँचे वे भारतीय आर्यों के बन्धु थे, परन्तु यह विषय यथार्थ इतिहास का होते हुए भी कल्पनात्मक है। जिस समय इतिहास के प्रकाश में दुनिया अपना मुँह उघाड़ती है, भारतवर्ष का धर्म और सामाजिक संगठन और सब देशों से भिन्न ही मिलता है। ऐतिहासिक काल से पूर्व भारतवर्ष एक जुदा इकाई बन चुका था। यही कारण है कि इतिहास हमें भारतवर्ष के धार्मिक और सामाजिक परिवर्तनों का जितना ब्यौरा सुनाता है, वह देश की सीमाओं से परिमित है। भारत के धार्मिक परिवर्तनों का प्रभाव सीमाओं से बाहर बहुत ही कम पड़ता है और बाहर के धार्मिक परिवर्तनों का प्रभाव भारत पर तभी पड़ता है जब उन धर्मों के अनुयायी लोग विजेताओं के रूप में देश में आ जाते हैं।

भारत का धन, उसका विस्तार और उसकी अन्दरूनी भिन्नता आदि सब बातें बाहर के विजेताओं को खींचती रही हैं। समय-समय पर बाहर की लड़ाकू जातियाँ सस्ता शिकार मारने के लिए इस स्वर्णदेश पर छापा मारती रही हैं। भारत पर मुख्य-मुख्य धावे 4 श्रेणियों में बाँटे जा सकते हैं। पहला धावा सिकंदर का था। दूसरा धावा उत्तर की अनेक जातियों का था जो सदियों तक जारी रहा। कभी हूण, कभी सीथियन और कभी पारसीक लोग भारत को जीतने का यत्न करते रहे। तीसरा धावा इस्लाम का हुआ, जो पहले के धावों से जबरदस्त, सबसे अधिक स्थायी और सबसे भारी असर उत्पन्न करने वाला हुआ। चौथा धावा यूरोपियन जातियों का है, जो यद्यपि बहुत पुराना नहीं है तो भी बड़ा गहरा है, बड़ा जबरदस्त है और इस्लाम से भी भयंकर है।

भारत के धार्मिक परिवर्तनों पर ये चारों आक्रमण बड़ा गहरा असर उत्पन्न करते रहे हैं, परंतु इसका यह अभिप्राय न समझना चाहिये कि केवल बाहर के प्रभाव ही भारत के धार्मिक विचारों को हिलाते रहे हैं। समय-समय पर आवश्यकता होने पर आन्तरिक प्रतिक्रिया भी उत्पन्न होती रही है। जाति की जरूरत के अनुसार बदले हुए वायुमण्डल के साथ अनुकूलता पैदा करने के लिए या बिगड़े हुए ढाँचे को सुधारने के लिए ऐसे सुधारक पैदा होते रहे हैं जो बिगड़ी को बनाने का प्रयत्न करते रहे हैं। यदि भारतवर्ष के धार्मिक परिवर्तनों का इतिहास देखा जाए, तो हमें ज्ञात होगा कि उसमें प्रतिक्रिया और ब्राह्य आक्रमण-दोनों का ही प्रभाव है।

यूनानियों के आक्रमण से पूर्व जो बड़े-बड़े धार्मिक परिवर्तन हुए, वे मुख्यतया आन्तरिक प्रतिक्रिया के ही परिणाम थे। ब्राह्मण ग्रन्थों के योग-प्रधान धर्म के विरुद्ध उपनिषदों के ज्ञानवाद की प्रतिक्रिया हुई। फिर वही विकार उत्पन्न होने पर बौद्ध-धर्म प्रतिक्रिया के रूप में उत्पन्न हुआ। ये दोनों बड़ी-बड़ी प्रतिक्रियायें बाहर के प्रभाव से शून्य थीं। ये केवल अन्दर से उत्पन्न हुई थीं। यही कारण था कि ये सब एक ही शरीर के अंगों के समान परस्पर पूर्णता उत्पन्न करती थीं। ब्राह्मण और उपनिषद् आदि ग्रन्थ एक-दूसरे के हाथ में हाथ डालकर चलते रहे और एक ही पुरुष के आँख-कान के सदृश जीवित रहे। उपनिषदों का ऊँचा ब्रह्मज्ञान धीरे-धीरे क्रियाहीन ईश्वर-विश्वास के रूप में परिणत हो गया और ब्राह्मण-ग्रंथों का कर्मकांड हिंसापूर्ण यज्ञ-प्रतिक्रिया की पद्धतियों में तब्दील हो गया। उस समय महात्मा बुद्ध ने क्रियात्मक धर्म का उपदेश देते हुए प्रेम और त्याग का संदेश सुनाया और एक सार्वभौम धर्म की नींव डाली।

बुद्ध के पीछे भारत पर सिकन्दर का आक्रमण हुआ। सिकन्दर का भारत में निवास बहुत थोड़े समय तक हुआ।

उसका कोई गहरा प्रभाव दिखाई नहीं देता, तो भी हम दो बड़ी घटनाओं में उसके दृष्टांत की छाया देख सकते हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्ययत्न सिकन्दर के उदाहरण से प्रभावित हुआ था और अशोक का धर्म-साम्राज्य स्थापित करने का उद्योग भी सिकन्दर की सार्वभौम विजय के यत्न से प्रभावित हुआ हो तो कोई आश्चर्य नहीं। जैसे चन्द्रगुप्त का भारतीय साम्राज्य यूनान के अभीष्ट भारतीय साम्राज्य का उत्तर था, इसी प्रकार अशोक का धार्मिक आक्रमण यूनान की सभ्यता और संस्कृति के आक्रमण का प्रत्युत्तर था।

यही दशा हम गुप्त काल में देखते हैं। गुप्त सम्राटों का राजनैतिक साम्राज्य हूणों और सीथियनों के आक्रमणों से देश की रक्षार्थ एक प्रकार का दुर्ग था। राजनैतिक संगठन प्रायः बाहर से आने वाली चोटों के कारण ही उत्पन्न हुआ करते हैं। गुप्त साम्राज्य उत्तर की जातियों की विजय-कामना का फल था। साथ ही पुराने ब्राह्मण-धर्म का पौराणिक धर्म के रूप में संगठन जहाँ एक ओर आर्य-जाति की आन्तरिक स्थिति को सूचित करने वाला चिन्ह था, वहाँ साथ ही वह उत्तर दिशा के असभ्य आक्रमणकारियों के प्रभाव से ही हीन नहीं था। पौराणिक धर्म के संगठन में अन्दर की हलचल और बाहर की क्रिया दोनों ही स्पष्ट दिखाई देती हैं।

बहुत काल पीछे लगभग 11वीं शताब्दी के आरम्भ में मुसलमानों का भारत पर दूसरा आक्रमण प्रारम्भ होता है। इस्लाम का भारत पर तब राजनैतिक आक्रमण नहीं था। वह आक्रमण प्रधानतया धार्मिक था, राजनैतिक विजय उसका केवल आनुषंगिक फल था। इस्लाम की तलवार भारत को मुसलमान बनाने आई थी। आकर देखा तो शिकार को निर्बल पाया। छिन्न-भिन्न भारत थोड़े ही यत्न में राजनैतिक पराधीनता में आ गया। तलवार का असली उद्देश्य भारत को धार्मिक दृष्टि से विजित करना था। यह निश्चय से कहा जा सकता है कि इस उद्देश्य में इस्लाम को काफी सफलता प्राप्त नहीं हुई। कारण यह है कि जहाँ भारत कई सदियों तक पराधीन रहकर भी अपनी सम्मिलित राजनैतिक शक्ति को मुसलमानों की राजनैतिक शक्ति के विरोध में खड़ा न कर सका, वहाँ उसने प्रारम्भ से ही अपने धार्मिक संगठन को समयानुकूल परिवर्तित करके आत्मरक्षा के लिए खड़ा कर दिया था।

मुसलमानों के सुदीर्घ-काल में भारत के धर्म में हमें जो उतार-चढ़ाव दिखाई देते हैं, वे दो प्रकार के हैं। एक ओर ब्राह्मण आक्रमण को रोकने के लिए खाइयाँ खुद रही हैं, दूसरी ओर कई स्थानों पर एक विश्वव्यापी सिद्धान्त में इस्लाम और हिन्दू-धर्म को सम्मिलित करने के प्रयत्न हो रहे हैं। इन दोनों ही में हमें बाहर का असर दिखाई देता है। सती-प्रथा, पर्दा, खान-पान के बन्धन, जाति के कड़े विभाग, छूत-छात-ये बाड़ें थीं जिनका उद्देश्य भारतीय धर्म की इस्लाम से रक्षा करना था। सदियों तक भारतीय धर्म इस्लाम के प्रभाव को रोकने के लिए चेष्टा करता रहा और इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि जैसी असफलता धार्मिक दृष्टि से इस्लाम को भारत में हुई, वैसी कहीं नहीं हुई।

परन्तु जो बाँध इस्लाम की गति को रोकने के लिए बन रहे थे, वे हर प्रकार से लाभदायक ही सिद्ध नहीं हुए। उन्होंने शुद्ध हवा का प्रवेश रोक दिया, उन्नति और विकास के लिए गुंजायश न छोड़ी और धर्म के बलवान् प्रवाह को घेरकर काई, मच्छर और कीचड़ का घर बना दिया। शत्रु के धावे को रोकने के लिए शहर के निवासी चारों ओर खाई खोद लेते हैं, ऊँची दीवार चुन देते हैं, बाहर आना-जाना रुक जाता है। शत्रु अन्दर न आ सकता, परन्तु शहर के निवासी भी बाहर नहीं जा सकते। उन्नति रुक जाती है, खाना-पीना कम हो जाता है, महामारी पड़ जाती है। यदि कोई नगर अपनी रक्षा भी करना चाहे और महामारी से भी न मरना चाहे तो उसके लिए एक ही मार्ग है कि वह किले से निकलकर शत्रु पर जा टूटे और उसे मार भगाए। दुर्भाग्य से उस समय हिन्दू धर्म में जान नहीं थी। वह आत्म-रक्षा में लगा रहा, इस्लाम पर प्रत्याक्रमण करने का उसने विचार नहीं किया। फल यह हुआ कि घर में महामारी पड़ गई। 19वीं शताब्दी के मध्य में हम भारत के असली धर्म को जंजीरों से बँधा हुआ, दीवारों से घिरा हुआ और शहतीरों से दबा हुआ पाते हैं।

मुसलमान-काल के अन्तिम भाग में, अकबर की उदार धर्म-नीति के प्रभाव से कुछ ऐसे भी यत्न हुए जिनका उद्देश्य धर्म के विश्वरूप को आगे रखकर हिन्दू-मुसलमान के भेद को मिटाना था। भक्त कबीर ऐसे यत्न करने वालों में से मुख्य था। कबीर के शिष्य उसके सिद्धान्त का निम्नलिखित शब्दों में वर्णन करते हैं-

सबसे हिलिये सबसे मिलिये,
सबका लीजिये नाऊं।
हाँ जी हाँ जी सबसे कीजिये,
बसे आपने गाऊं।।

भक्त कबीर के वचनों से ज्ञात होगा कि वह धर्म के व्यापक रूप में भेदों को किस प्रकार तिरोहित करना चाहता था।

कबीर के शिष्य बुल्ला साहिब ने अपने झूलने में यह कविता लिखी है-

जहं आदि न अन्त न मध्य है रे,
जहं अलख निरंजन है मेला।
जहं वेद किते बन भेद है रे,
नहिं हिन्दु तुरक न गुरु चेला।।
जहं जीवन मरन न हानि है रे,
अगम अपार में जाय खेल।
बुल्ला दास अतीत यों बोलया री,
सतगुरु सत शब्द देला।।

मारवाड़ के भक्त दरिया साहिब ने हिन्दू-मुसलमान दोनों को एक ही पलड़े में डाल दिया है-

मुसलमान हिन्दू कहा,
षट दरसन रंक राव।
जन दरिया निज नाम विन
सब पर जम का दाव।।

दूलनदास जी अपने झूलने में कहते हैं-

हिन्दू तुरक दुइ दीन आलम,
आपनी ताकीन में।
यह भी न दूलन खू है,
करूँ ध्यान दशरथनन्द का।।

वही कवि सत्तनाम में वेद के विषय में कहते हैं-

तीन लोक तो वेद बखाना।
चौथ लोक का मर्म न जाना।।

भक्तराज धरनीदास जी कहते हैं-

एक धनी धन मोरा हो।
जो धन ते जन भये धनी,
बहु हिन्दु तुरक कटोरा हो।
जो धन धरनी सहजहिं पावौ,
केवल सतगुरु के निहोरा हो।।

कबीर तथा अन्य भक्तों का यह यत्न चाहे कितना ही उत्तम था, परन्तु उसमें सफलता नहीं हुई। सफलता न होने का कारण स्पष्ट है। भक्त लोग दो ऐसे धर्मों को मिलाना चाहते थे, जिनके मिलने में दो बड़ी-बड़ी रुकावटें थीं। पहली रुकावट राजनैतिक थी। मुसलमान विजेता थे, हिन्दू विजित थे। जहाँ एक ओर विजेता विजित के धर्म को तुच्छ मानकर उसके साथ संधि करने को उद्यत नहीं होता, वहाँ विजित जाति यदि इतिहास और आत्माभिमान रखती हो तो कभी विजेता के धर्म को स्वीकार करने के लिए उद्यत नहीं होती। राजनैतिक पराजय से गए हुए आत्म-सम्मान को वह धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में चौगुने हठ के साथ सँभालने का यत्न करती है। कबीर और उसके साथियों की असफलता का दूसरा कारण यह हुआ कि वे ऐसे दो धर्मों को मिलाना चाहते थे, जो मौलिक रूप से भिन्न हैं, जिनकी आधारभूत कल्पनायें ही जुदा-जुदा हैं।

मिलाने के यत्न निष्फल हुए। हिन्दू-धर्म ने प्रत्याक्रमण करने का यत्न न करके आत्मरक्षा के लिए खाई खोदी, दीवार चुनी ; यहाँ तक कि दम घुटने लगा, उचित भोजन के अभाव से ढाँचा ढीला होने लगा, अंग से अंग जुदा हो गया। हारे हुए, घिरे हुए, भूखे किले में सदा फूट पड़ जाया करती है। हिन्दू-धर्म के घिरे हुए किले में भी फूट पड़ गई। परिणामतः अनगिनत मत और सम्प्रदाय उत्पन्न हो गए जिनकी अधिक संख्या का अनुमान इसी से लग सकता है कि वैष्णव, शैव और शक्ति इन तीन बड़े पन्थों में से केवल वैष्णव मत के ही निम्नलिखित 20 सम्प्रदाय थे जो एक-दूसरे को झूठा मानते और कहते थे-

(1) श्री सम्प्रदाय, (2) वल्लभाचारी, (3) मध्वाचारी या ब्रह्म सम्प्रदाय, (4) सनकादिक सम्प्रदाय या 'नीमावत', (5) रामानन्दी या रामावत, (6) राधावल्लभी, (7) नित्यानन्दी, (8) कबीरपन्थी, (9) खाकी, (10) मलूकदासी, (11) दादूपन्थी, (12) रमदासी, (13) सेनाई, (14) मीरोबाई, (15) सखीभाव, (16) चरणादासी, (17) हरिश्चन्द्री, (18) साधनापन्थी, (19) माधवी, (20) वैरागी और नागे संन्यासी।

शैवों के 7 बड़े भेद थे-

(1) संन्यासी दण्डी आदि, (2) योगी, (3) जंगम, (4) ऊर्ध्वबाहु, (5) गूदड़, (6) रुखड़, (7) कड़ालिंगी।

शक्तिकों के बड़े भेद निम्नलिखित थे-

(1) दक्षिणाचारी, (2) वामी, (3) कानचेलिये, (4) करारी, (5) अघोरी, (6) गाणपत्य, (7) सौरपत्य, (8) नानकपन्थी, (9) बाबा लालो, (10) प्राणनाथी, (11) साध, (12) सन्तनामी, (13) शिवनारायणी, (14) शून्यवादी।

('आर्य दर्पण' जून 1880 ई.)

तालिका यह दिखाने के लिए उद्धृत की गई है कि 19वीं शताब्दी के मध्य में हिन्दू धर्म का ढाँचा किस प्रकार से बिगड़ चुका था। भेद बेहद बढ़ गए थे। अनाचार पूरे जोर पर था। धर्म

www.thearyasamaj.org

की प्रेरिका शक्ति जाती रही थी।

भारत का प्राचीन आर्य-धर्म जब इस सड़ाँद की दशा में था, तब देश पर चौथे विदेशी तूफान का आक्रमण हुआ। यूरोपियन जातियाँ आखेट-भूमि की टोह लगाती हुई भारत के समुद्र-समीपवर्ती सीमाप्रान्तों पर आ पहुँचीं। उन्हें किस प्रकार देश में प्रवेश मिला, किस प्रकार देश की बिगड़ी हुई दशा ने उन्हें यहाँ आधिपत्य जमाने में सहायता दी, किस प्रकार अन्य शक्तियों को परास्त करके अंग्रेजों ने प्रभुत्व जमाने में सफलता प्राप्त की-ये सब विषय राजनैतिक इतिहास के हैं। हमें यहाँ यह देखना है कि यूरोपियन सफलता का प्रभाव भारत के धार्मिक विचारों पर किस प्रकार पड़ा। यूरोपियन जातियाँ अपने साथ दो वस्तुएँ लाईं-ईसाइयत, और पाश्चात्य सभ्यता। इन दोनों का भारत पर एक-साथ असर हुआ। इस्लाम तलवार के साथ आया था, वह बड़े वेग से फैला, परन्तु उसका प्रतिरोध भी उसी वेग से हुआ। ईसाइयत का प्रचार दूसरी विधि से हुआ। उस विधि में शिक्षणालय, प्रचार का संगठन और प्रलोभन-ये तीन साधन प्रधान थे। ईसाइयों ने स्कूल और कॉलेज खोलकर भारत के शिक्षित समाज को खोखला कर देने का यत्न किया। कुछ काल तक उस यत्न में सफलता भी हुई। ईसाइयों का प्रचार-सम्बन्धी संगठन पहले ही बहुत बढ़िया था, भारत के अनुभव से उसमें और भी अधिक पूर्णता आ गई। जो भारतवासी ईसाई बन गये, वे चाहे किसी भी दर्जे के थे, सरकारी नौकरियों में उन्हें तरजीह दी जाने लगी। इस प्रकार ईसाई धर्म धीरे-धीरे परन्तु निश्चित रूप से देश की जड़ों में प्रवेश करने लगा।

जब तक इस्लाम का प्रचार तलवार के जोर से होता रहा, हिन्दू धर्म भी उससे बचने के लिए अपने कोट के चारों ओर खाइयाँ खोदता रहा, परन्तु अकबर तथा उसके दो उत्तरवर्ती बादशाहों ने गहरे शान्त उपायों से इस्लाम की जड़ पाताल में पहुँचाने का उद्योग किया। तब ऐसे भक्तजन उत्पन्न हुए जिन्होंने हिन्दू-मुसलमानों के परस्पर भेदों को दूर करके एकेश्वरवाद के झण्डे के तले जाने का यत्न किया। फिर जब औरंगजेब ने शान्त नीति का परित्याग किया, तब उत्तर और दक्षिण में हिन्दू धर्म तलवार लेकर उठ खड़ा हुआ। यह स्मरण रखना चाहिए कि औरंगजेब की अनुदार धार्मिक नीति से पहले सिख मत भी हिन्दू-मुसलमानों के भेद को मिटाने का ही एक यत्न था।

ईसाइयत का प्रचार अकबर की नीति से शुरू हुआ। परिणाम भी वैसा ही हुआ। विश्वासी भारतवासियों के हृदय ने बिना किसी आशंका के ईसाइयत के प्रभावों का स्वागत किया। बड़ी प्रतिष्ठा और योग्यता रखने वाले अनेक भारतवासी, जो शायद तलवारी धर्म का सामना करने में तलवार के घाट उतरने को सहर्ष उद्यत होते, इस शान्त धावे के शिकार हुए। ईसाई काल के कुछ ही समय पीछे कबीर आदि भी जन्म लेने लगे। धर्म के विश्वरूप से ईसाइयत और हिन्दूपन के भेद को खपा देने का उद्योग बंगाल में ब्रह्मसमाज ने उठाया। यदि ब्रह्मसमाज के इतिहास को विस्तार से पढ़ें तो हमें प्रतीत होगा कि उसके नेताओं का उद्योग ईसाइयत और हिन्दू धर्म की मध्यमावस्था निकालकर दोनों को साथ-साथ दीर्घजीवी बनाने के लिए था-हिन्दुपन को ईसाइयत की कलम लगाकर उस रगड़ को दूर करने के लिए था, जिसका शीघ्र या देर में उत्पन्न होना अवश्यम्भावी था।

शान्त परन्तु गहरे और पेचदार उपायों से ईसाइयत भारत के धार्मिक दुर्ग में प्रवेश कर रही थी। वह दुर्ग बड़ी शोचनीय दशा में था। रीति और बन्धन की जो बाड़ें इस्लाम के धावे को रोकने के लिए बनाई गई थीं, वे अपनी ही वृद्धि को रोक रही थीं। चारदीवारी से घिर जाने के कारण दुर्ग के निवासियों में फूट पड़ी हुई थी। यदि संक्षेप में दुर्ग की दशा को कहना हो तो हम कहेंगे कि भारत के निजधर्म-हिन्दू धर्म-को रुढ़ि और तुच्छ भेदों के रोग लगे हुए थे। एक ओर बन्धन और रीति-रिवाज का जोर, दूसरी ओर तुच्छ भेदों के कारण एकता का नाश-ये दो रोग थे, जिनसे भारत का धर्मरूपी शरीर पीड़ित हो गया था। ईसाइयत के कीटाणु हवा और पानी के साथ चुपचाप उस शरीर में प्रवेश कर रहे थे। ब्रह्मसमाज ने इस दशा का अनुभव तो किया, परन्तु उसे रोकने का जो यत्न किया वह यह था कि ईसाइयत के कीटाणुओं से युक्त जल को कुछ स्वादुरूप दे दिया। इस उपचार से रोग दूर होगा या नहीं-कीटाणुओं से युक्त जल शरीर में प्रविष्ट होने से रुकेगा या नहीं-इन प्रश्नों का उत्तर हम नहीं देंगे, क्योंकि इतिहास दे चुका है।

यही दशा थी जब दयानन्द ने गुरु से विदायगी ली। उसने इस दशा के सुधार का क्या उद्योग किया, यह अगले परिच्छेदों का विषय है।

सुधार की प्रारम्भिक दशा
(ई. 1863 से 1866 तक)

यह समझना भूल है कि स्वामी दयानन्द ने गुरु के पास से आते ही सुधार का पूरा कार्यक्रम विस्तीर्ण कर दिया था। गुरु के पास से विदा होने के समय स्वामी जी के पास ये वस्तुएँ थीं-(1) उनके पास संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का पाण्डित्य था; (2) अखण्ड ब्रह्मचर्य, प्रतिभा, उत्साह और व्याख्यान-शक्ति के गुण थे, (3) विद्वानों, साधुओं और पन्थाइयों की

www.thearyasamaj.org

दशा देखकर निश्चय हो चुका था कि धर्म की दशा बिगड़ी हुई है। सुधार करने और विशुद्ध धर्म का प्रचार करने की अभिलाषा विद्यमान थी। एक सुधारक में जिन गुणों की बीजरूप से आवश्यकता होती है, वे स्वामी दयानन्द में विद्यमान थे। साथ ही यह भी निश्चित है कि सुधार-कार्य के यौवन में स्वामी दयानन्द के शस्त्रागार में जो-जो साधन सन्नद्ध हो गये थे, अभी उनमें से कुछेक का विकास होना बाकी था-(1) अभी स्वामी जी को वेद पूर्णत: प्राप्त नहीं हुए थे। वेदों की पुस्तकों तक की खोज अभी शेष थी, उनकी व्याख्या या उनमें एकान्त भावना की अभी चर्चा तक नहीं थी ; (2) संसार का विस्तृत ज्ञान संसार में भ्रमण करने पर ही प्राप्त होता है। अभी तक गृहस्थों और पुजारियों की सृष्टि में अधिक प्रवेश का अवसर न मिलने से रोग का पूरा-पूरा ज्ञान भी नहीं हुआ था ; (3) रोग का ज्ञान होने पर भी सुधाररूपी दवा का ठीक प्रयोग तभी हो सकता है, जब वैद्य भी कुछ परीक्षण कर ले। वैद्य पहले एक दवा का प्रयोग करता है, फिर उसके फल यदि सन्तोषदायक हों तो उसी को जारी रखता है अन्यथा बदल देता है। चतुर-से-चतुर वैद्य भी ठीक परीक्षण करके ही ठीक ओषधि पर पहुँचता है।

पहले तीन साल तक स्वामी दयानन्द ने जो सुधार का कार्य किया, वह एक प्रकार से परीक्षणात्मक था। वह उस सर्वतोगामी सुधार का प्रारम्भिक पड़ाव था, जो कुछ वर्ष कार्य पीछे भारत के विशाल कार्य को प्रकम्पित कर देने वाला था। हम इस प्रारम्भिक कार्य में भी उन सब गुणों को बीज-रूप में पाते हैं, जो बाद में वृक्षरूप में परिणत होकर सफलता के साधन हुए ; परन्तु बाद में सुधार के कार्यक्रम में जो पूर्णता आ गई थी वह अभी नहीं दिखाई देती। सुधाररूपी चित्र की बाह्य रेखायें तैयार थीं, परन्तु उसमें रंग और छाया का स्थान खाली था, जिसे भरने के लिए समय और अनुभव की आवश्यकता थी।

इस प्रारम्भिक तीन सालों में स्वामी जी ने जो सुधार उपस्थित किये, उनमें से पहला और मुख्य स्थान मूर्ति-पूजा के खण्डन का है। मूर्ति-पूजा में उनका विश्वास उसी क्षण से हिल चुका था, जिस क्षण उन्होंने शिवरात्रि की अँधियारी में शिवलिंग के ऊपर से चूहे को चावल उठाते हुए देखा था। उस समय जो अश्रद्धा उत्पन्न हुई, वह सत्संग, विद्याभ्यास और विचार से विरोधी विश्वास के रूप में परिणत हो गई। मूर्ति-पूजा को भ्रमात्मक मानकर परमात्मा के निराकार-निर्दोष अद्वितीय स्वरूप का प्रतिपादन करना स्वामी दयानन्द का प्रारम्भ से ही लक्ष्य था। सुधारकों की कसौटी ईश्वर-सम्बन्धी विश्वास है। कोई सुधारक या धर्मसंस्थापक उपास्यदेव का जिस स्वरूप में प्रतिपादन करता है, उसी से उसका ऊँच-नीच परखा जाता है। ईश्वर-स्वरूप-सम्बन्धी विचार धर्मों के नपैने हैं। कोई भी धर्मोपदेशक जनता में कोई भारी परिवर्तन नहीं उत्पन्न कर सकता, जब तक वह उनके मूल धार्मिक विचारों को नये रंग पर नहीं मोड़ देता। सुधारक यत्न करते हैं कि वे आम के पेड़ की पत्तियों में कलम लगाकर फल को मीठा बना सकेंगे, परन्तु निश्चय है कि वे निराश होंगे। ऐसे यत्न हुए और निष्फल हुए। जब तक तने में कलम नहीं लगती, तब तक फल मीठे नहीं हो सकते। स्वामी दयानन्द के हृदय में सुधारों की भावना का प्रारम्भ मूर्ति की सत्ता में अश्रद्धा होने से हुआ था। ईश्वर-सम्बन्धी अशुद्ध विचारों की जड़ में यह पहला कुठारपात था। ज्यों-ज्यों विद्या की वृद्धि होती गई, ज्ञान के चक्षु खुलते गये, सद्गुरुओं से उपदेश सुनने का अवसर मिलता गया, त्यों-त्यों वही प्रारम्भिक भावना अधिकाधिक पुष्ट होती गई।

विद्याभ्यास समाप्त करने के अनन्तर स्वामी दयानन्द ने जो पहला सन्देश जनता को सुनाया, वह निराकार ईश्वर की उपासना का था। मथुरा से आप सीधे आगरा गये और यमुना के किनारे भैरव के पास लाला गल्लामल रूपचन्द के बगीचे में ठहरे। वहाँ अन्य सदुपदेशों के साथ-साथ मूर्ति-पूजन का खण्डन बराबर जारी रहता था। स्वामी जी ने वहाँ पंचदशी की कथा प्रारम्भ की। उसकी 16वीं कारिका का उत्तरार्द्ध यह है-'मायां बिम्बो वशीकृत्य तां स्यात्सर्वज्ञ ईश्वर :' माया में चिदात्मा का प्रतिबिम्ब पड़ता है, वह माया को वश में कर लेता है और ईश्वर कहाता है। कहाँ निराकार ब्रह्म और कहाँ उसका प्रतिबिम्ब पड़ना ! ईश्वर प्रतिबिम्ब-मात्र है-तत्त्व नहीं। जिस दयानन्द ने वेदों में 'अकायमव्रणमस्नाविरं' इत्यादि शब्दों से विशेषित ब्रह्म का अध्ययन किया था, और ब्रह्म तथा ईश्वर एक ही चिदात्मा के नाम हैं-यह निर्णय किया था, उसे पंचदशी के ऐसे लेखों ने धक्का दिया। स्वामी दयानन्द ने उस समय से पंचदशी और अद्वैतवाद के अन्य ग्रन्थों को त्याज्यों की श्रेणी में लिख लिया।

जीवन-चरितों के लेखकों ने लिखा है कि इन पहले तीन सालों में स्वामी दयानन्द वैष्णव मत का खण्डन करते थे, और शैव मत का प्रतिपादन करते थे। उस समय (और अब भी यही दशा है) मथुरा के आसपास वैष्णव सम्प्रदायों का बड़ा जोर था। मथुरा कृष्ण जी की पुरी है। वह वैष्णवों का गढ़ है। वहाँ रहते हुए आपने उस अन्ध-परम्परा को देखा जो कृष्ण के नाम पर चलाई गई थी। रामानुज और वल्लभ-सम्प्रदाय की लीलाओं के देखने का भी आपको अवसर मिला। भागवतकार ने योगिराज कृष्ण के चरित्र को कोई अंशों में कैसा बिगाड़ा है, यह भी

आपने भली प्रकार देखा। इस कारण उस समय स्वामी जी के हृदय में वैष्णवों के विश्वासों के प्रति बड़ा क्षोभ था। वृन्दावन की लीलाएँ उन्हें प्रेरित करती थीं कि वह वैष्णव मत का खण्डन करें।

आगरा से धौलपुर ठहरते हुए स्वामी जी ग्वालियर पहुँचे। वहाँ सिन्धिया की ओर से भागवत की कथा का प्रबन्ध हो चुका था। एक विद्वान् साधु आया है, यह सुनकर महाराज ने स्वामी जी को भी निमन्त्रण भेज दिया। स्वामी जी ने कहला भेजा कि भागवत की कथा से दुःख के सिवा कुछ न मिलेगा, यदि सुख चाहते हो तो गायत्री का पुरश्चरण कराओ। राजा यह सुनकर केवल हँस दिया। भागवत की कथा प्रारम्भ हो गई। उधर स्वामी जी ने संस्कृत में भागवत के खण्डन में व्याख्यान देने आरम्भ किये। स्वामी जी कुछ समय भ्रमण और उपदेश में बिताकर जयपुर पहुँचे और वहाँ चार मास तक रहे। यहाँ आप उपनिषदों की कथा करते थे, और मूर्ति-पूजा का खण्डन करते थे। भागवत के खण्डन में जयपुर में आपने एक विज्ञापन भी प्रकाशित किया, जिसमें बतलाया कि भागवत के कर्ता व्यासदेव नहीं, अपितु बोपदेव नाम का पण्डित है, जिसने श्रीकृष्ण के निष्कलंक चरित को कलंकित कर दिया है। पुष्कर के मेले में पहुँचकर स्वामी जी ने रामानुज-सम्प्रदाय का खूब खण्डन किया और कण्ठियाँ भी तुड़वाईं। इस प्रकार स्वामी जी मूर्ति-पूजा और अन्य सब कुरीतियों के विरुद्ध जो भयंकर तूफान खड़ा करने वाले थे, उसकी पहली चोटें वैष्णवों पर पड़ीं। प्रतीत होता है कि वैष्णवों के विरोध में प्रारम्भिक काल में वह कभी-कभी शैव मत का पक्ष ले लिया करते थे। उसके विषय में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। प्रथम तो यह कि अभी तक स्वामी जी का सुधार का पूरा प्रोग्राम बना नहीं था-बन रहा था। दूसरी यह बात कि स्वामी जी कहा करते थे कि 'शिव परमात्मा का नाम है, पार्वती के पति को मैं नहीं मानता।'

आपको गोरक्षा की प्रारम्भ से ही धुन थी। 1866 ई. में मई मास में स्वामी जी अजमेर पहुँचे, और बंसीलाल जी सरिश्तेदार के यहाँ ठहरे। यहाँ आप मेजर ए. जी. डेविडसन कमिश्नर, और कर्नल ब्रुक असिस्टेंट कमिश्नर से मिले और उनके सम्मुख गोरक्षा का प्रश्न रखा। स्वामी जी ने उन्हें समझाया कि गौओं की हत्या बन्द करने से राजा और प्रजा दोनों का लाभ है। सरकारी अफसर तो सरकारी अफसर ही ठहरे। असिस्टेंट कमिश्नर साहब ने स्वामी जी को लाट साहब के नाम एक चिट्ठी लिख दी और कह दिया कि आप 'लाट साहब से अवश्य मिलें। जिस साहब को आप मेरी चिट्ठी दिखायेंगे, वह आपसे अवश्य मिलेगा।' सरकारी अफसर का मीठा इन्कार स्वामी जी ने शान्ति से अंगीकार कर लिया। यह स्वामी जी के हृदय की शुद्धता और सादगी का सबूत है।

प्रारम्भ से अपने विचारों को प्रकट करने के लिए स्वामी जी तीन उपाय काम में लाते थे। व्याख्यान देते थे, विज्ञापन निकालते थे और शास्त्रार्थ के लिए ललकारते थे। व्याख्यान तो सभी स्थानों पर देते थे ; जयपुर आदि में लिखित विज्ञापन भी प्रकाशित किए। पहले-पहल आपने ग्वालियर में भागवत के विषय में वैष्णव पण्डितों को चैलेंज दिया। परन्तु सब पौराणिक पण्डित इधर-उधर खिसक गए, कोई सामने नहीं आया। फिर जयपुर में महाराज के सामने व्यास बख्शीराम जी आदि से स्वामी जी का शास्त्रार्थ हुआ। इसमें भी पौराणिक पण्डित निरुत्तर हो गये। शास्त्रार्थों की बहुत धूम तो पुष्करराज में रही। यहाँ आप देर तक ब्रह्मा जी के मन्दिर में निवास करते रहे। कभी पण्डों से, कभी ब्राह्मणों से और कभी संन्यासियों से शास्त्रार्थ की चर्चा चलती रहती थी। एक बार बहुत-से पण्डे लट्ठ लेकर स्वामी जी पर चढ़ आये। यों तो स्वामी जी अकेले ही पर्याप्त थे, परन्तु एक सहायक भी आ पहुँचा। ब्रह्मा जी के मन्दिर के पुजारी मानपुरी जी मोटा डण्डा लेकर पहुँच गये और पण्डों को भगा दिया।

अजमेर में लौटकर आपका पादरी रॉबिन्सन और पादरी शूलब्रेड से ईश्वर-जीव आदि विषयों पर 3 दिन तक शास्त्रार्थ होता रहा। पादरियों को निरुत्तर होना पड़ा। वह स्वामी जी के सुधरे हुए विचारों और वाक्-चातुरी से इतने प्रसन्न हुए कि स्वामी जी को एक पत्र लिखकर दे दिया। जिसमें लिखा था कि 'हमने जीवनभर में ऐसा संस्कृत का विद्वान् नहीं देखा। ऐसे मनुष्य संसार में कम होते हैं।'

इस प्रकार तीनों उपाय, जिनसे एक प्रचारक को काम लेना चाहिए, प्रारम्भ से ही ऋषि दयानन्द ने अंगीकार कर लिये थे। आगे इन्हीं साधनों का विकास होता गया, यहाँ तक कि स्वामी जी वाणी, लेख और शास्त्रार्थ-इस तीन प्रकार की युद्ध-सामग्री के पूरे अधीश्वर हो गये।

सुधार की मध्यम दशा

1867 ईसवी के अप्रैल मास में हरिद्वार का कुम्भ था। देशभर के साधु-संन्यासी इस मेले में एकत्र होते हैं। हिन्दू जाति की भलाई और बुराई, सुन्दरता और कुरूपता दोनों का ही स्पष्ट

www.thearyasamaj.org

रूप से दिग्दर्शन करना हो, तो दस-पाँच दिन इस विख्यात समारोह की सैर कर लेना पर्याप्त है। हिन्दू जाति श्रद्धामयी है। उस श्रद्धा का कुम्भ के मेले में मानो समुद्र उमड़ पड़ता है। जहाँ एक ओर ऐसे बूढ़े पुरुष लाठियाँ टेककर स्टेशन से धर्मशाला की ओर जाते दिखाई देंगे, जिनकी कमर झुक गई है, दाँत मुँह को छोड़ भागे हैं, एक पाँव यमपुरी की देहलीज पर धरा जा चुका है, वहाँ दूसरी ओर दुधमुँहे बच्चे, धूप और प्यास का कष्ट सहन करती हुई असूर्यम्पश्या हिन्दू ललनाओं की गोद में रहकर भारत की माताओं के अतुल विश्वास और तप की सूचना देते हैं। गृहस्थ लोग लाखों की संख्या में एकत्र होकर साधु-सन्तों के दर्शन करते हैं, गंगा के विशुद्ध शीतल जल में स्नान करके अपने को धन्य मानते हैं और अब तब भी हिन्दूपन के जीवित होने की सूचना देते हैं। ऐसे ही मेले भारत की आर्य जाति की मौलिक एकता को सिद्ध करते हैं। भीड़ में दृष्टि उठाकर देखिये-कहीं अनघड़ पंजाबी साफा दिखाई देता है, तो कहीं लखनऊ के शौकीन की दुपल्ली टोपी में से घुँघराले बाल दृष्टिगोचर होते हैं। कहीं मद्रासी के नंगे सिर पर गोखुर से दुगुनी शिखा नजर आती है, तो कहीं नाजुक गुजराती नाटे शरीर के शिरोभाग पर लाल पगड़ी सुहाती है। सारांश यह कि भारतभर के हिन्दू निवासी एक डोरी में बँधे हुए हैं-कुम्भ के मेले पर अविश्वासी हृदय भी इस बात पर विश्वास किये बिना न रहेगा।

यह इस तस्वीर का उज्ज्वल पहलू है। अँधेरा पहलू भी कुछ कम गहरा नहीं है। छल-कपट-आलस्य तथा स्वार्थ के शरीर बिना ढूँढ़े ही सिल जायेंगे। भोगमय त्याग, दुराचारमय साधु-भाव और हृदय का विरोधी रूप आपको पग-पग पर दिखाई देगा। जिनके गृहस्थ नहीं हैं, उनके अंतः पुर में पुत्र-कलत्र ; जिनकी आमदनी का कोई साधन नहीं है, उनके डेरों पर हाथी और घोड़े ; और जो त्यागी कहलाते हैं उनके सन्दूकों में लाखों के तोड़े-यह सब-कुछ बिना विशेष यत्न के ही दीख जायेगा। सरल हृदय भक्त और भक्तिनों के विश्वास का घात करने वाले भगवा वेशधारी मठेश्वर भिन्न-भिन्न उपायों से अपने इन्द्रिय-सुख की साधना में मग्न दिखाई देते हैं। जिसे हिन्दू धर्म की गिरी हुई दशा देखनी हो, वह आँखें खोलकर एक बार हरिद्वार के कुम्भ की सैर कर आवे। जहाँ एक ओर कुम्भ पर एकत्रित हुआ जन-समूह देशभर के हिन्दुओं की मौलिक एकता को सूचित करता है, वहाँ साथ ही वह हिन्दुओं की नासमझी और अन्धी श्रद्धा में एकता को भी सूचित करता है।

स्वामी दयानन्द कुम्भ-स्नान से एक मास पूर्व ही हरिद्वार पहुँच गए और उन्होंने सप्तस्रोत के पास गंगा की रेती में कुछ छप्पर डालकर मध्य में पाखण्ड-खण्डनी झण्डी गाड़ दी। सप्तस्रोत में खड़े हुए युवक सुधारक के सामने जो परस्पर विरोध उपस्थित हुआ होगा, उसकी कल्पना की जा सकती है। एक ओर संसार में अनूठे हिमालय और भागीरथी का प्राकृतिक चित्र, दूसरी ओर अज्ञान और छल के मानुषिक चमत्कार-क्या यह आश्चर्य और खेद उत्पन्न करने वाला दृश्य नहीं है ? सप्तस्रोत पर खड़े होकर जरा उत्तर की ओर दृष्टि उठाइए। पर्वत के पीछे पर्वत, जंगल के ऊपर जंगल, यही क्रम बराबर चला गया है, यहाँ तक कि हिमालय की गगनभेदी चोटियाँ चाँदी के सदृश्य चमकते हुए बर्फ के मुकुट में अन्तर्धान हो गईं। इन चाँदी का पिघला हुआ प्रवाह घाटियों, कन्दराओं और तलहटियों से होकर हरिद्वार के पास से गुजरता है। जल क्या है, नील मणियों की छवि से प्रतिबिम्बित शुद्धतम अमृत है, जिसकी शीतलता सोने में सुगन्ध के समान है। एक ओर यह मन और तन को प्रसन्न और उन्नत करने वाला दृश्य ! दूसरी ओर स्वार्थ, अज्ञान और दम्भ की लीला से बिगड़ी हुई मनुष्य-प्रकृति ! जिसे परमात्मा ने इतना सुन्दर बनाया है, उसे मनुष्य ने कितना बिगाड़ दिया है ! जिसे मनुष्य नहीं बिगाड़ सका, वही सुन्दर है। ईश्वरीय सुन्दरता और मानवीय नीचता के दृश्य देखकर यदि युवक दयानन्द के हृदय में एक उग्र ज्वाला न भड़क उठती तो निःसन्देह वह पाषाणमय सिद्ध होता।

स्वामी दयानन्द ने मेले पर एकत्र हुए हिन्दू-समाज को देखा, और सम्पूर्ण समाज को एक ही बीमारी का शिकार पाया। क्या शैव, क्या वैष्णव, क्या संन्यासी, क्या वैरागी, सब एक ही धुन में मस्त हैं, सब एक ही लीक के राही हैं। सुधार की प्रारम्भिक दशा में स्वामी जी ने शैवों को वैष्णवों से कुछ ऊँचा ठहराया था ; कुम्भ पर देखा कि सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। न वे पूरे ज्ञानी हैं और न ये अधिक अज्ञानी हैं। जो थोड़ा सा साम्प्रदायिक भेद हृदय में विद्यमान था, गंगा के विमल जल से यह भी धुल गया।

कुम्भ के समारोह में शास्त्रपारंगत स्वामी दयानन्द की प्रसिद्धि शीघ्र ही फैल गई। गृहस्थ और साधु लोग निडर सुधारक के तेजस्वी भाषण सुनने के लिए आने लगे। कई विद्वानों ने योग्यता की परीक्षा करके उत्सुकता को दूर किया।

www.thearyasamaj.org

यहाँ पहले-पहल स्वामी दयानन्द जी की काशी के प्रसिद्ध स्वामी विशुद्धानन्द जी से मुठभेड़ हुई। विवाद पुरुष-सूक्त पर था। स्वामी विशुद्धानन्द जी ने 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्' इत्यादि मन्त्र से ब्राह्मण आदि वर्णों की ब्रह्मा के मुख से उत्पत्ति बतलाई और स्वामी दयानन्द जी ने शब्दार्थ-बल से यह सिद्ध करने का यत्न किया कि इस मन्त्र में ब्राह्मण को मुख के समान कहा है, मुख से उत्पन्न नहीं कहा। काशी के दिग्गज पण्डित के साथ एक युवक साधु की ऐसी बढ़िया टक्कर का जनता पर अवश्य ही बड़ा प्रभाव हुआ होगा।

कुम्भ का मेला हो गया। इस मेले में स्वामी जी के डेरे पर कई साधु और शिष्य ठहरे हुए थे। सबके लिए भोजन आदि का वहीं प्रबन्ध था। उस समय की रीति के अनुसार एक संघ के मुखिया साधु को सब प्रकार की जिस सामग्री की आवश्यकता होती थी, स्वामी जी के पास भी इस समय तक वह विद्यमान थी। मठाधारियों और महन्तों की दुर्दशा देखकर स्वामी जी का विशुद्ध हृदय जल उठा। उन्हें अपनी थोड़ी-सी सामग्री भी बोझिल प्रतीत होने लगी। उनके हृदय ने कहा कि यदि त्यागियों की विलासिता का नाश करना है, तो पहले स्वयं सर्वत्यागी बनना होगा। धर्म की बिगड़ी हुई दशा का अनुभव करके उन्हें अपने शरीर पर धारण करने के थोड़े-से कपड़े भी बहुत प्रतीत होने लगे। साधु की संक्षिप्त सामग्री भी कैदखाने की जंजीर प्रतीत होने लगी। गृह-त्यागी दयानन्द ने सर्वत्याग करने का निश्चय कर लिया।

डेरे पर जो कुछ भी था, भिखारियों को बाँट दिया गया। स्वामी दयानन्द ने एक कौपीन रख ली, शेष सब सामग्रो दरिद्रों में वितीर्ण कर दी। मलमल का थान और महाभाष्य का ग्रन्थ गुरु जी की सेवा में मथुरा भेज दिया। इस प्रकार संसारिक वस्तुओं के इस हल्के-से बन्धन को काटकर सर्वत्यागी स्वतन्त्र दयानन्द मनुष्य-जाति के बन्धनों को काटने के लिए सन्नद्ध हुआ। गंगा के पार, चण्डी के पर्वत के नीचे रेतीले किनारे पर कुछ समय तक तपस्या करके उन्होंने अपने-आपको उस महायुद्ध के लिए और भी अधिक तैयार किया, जिसकी ओर भगवान् की इच्छा उन्हें खींचे ले-जा रही थी।

यहाँ के सुधार की दूसरी दिशा का आरम्भ होता है। सुधारक की दृष्टि अधिक विस्तृत हो गई है, रहे-सहे रूढ़ि के बन्धन टूट गए हैं और निसर्ग से ही उज्ज्वल प्रतिभा वास्तविक संसार की घटनाओं से रगड़ खाकर और भी अधिक उज्ज्वल हो उठी है।

आर्यों की आत्मा है टंकारा

ले. श्री राजिन्द्र देव विज "आर्य कुटीर" 230, कालिया कॉलोनी, जालन्धर

मूलशंकर ने जन्म लिया गांव है वो टंकारा
मूलशंकर ढूँढ़े गुरु जो दिखाये सच्चा शिव
क्योंकि सच्चे शिव का था जो मतवारा
इक दिन गुरु मिल गये मथुरा में
विरजानन्द ने जाना मिल गया शिष्य न्यारा

ज्ञान पाया वेदों का सच्चे शिव को था पा लिया
दयानन्द की पूरी हुई शिक्षा जिसका था वो मतवारा
गुरु ने एक वचन है मांगा जो सबसे न्यारा
भारत मेरा गुलाम है, नहीं लोगों को वेदों का ज्ञान है
चले दयानन्द दूर करने को अन्धियारा
तो धन्य हो गया था तब टंकारा

ज्ञान बांटा समाज सुधारा पाखण्डों को दूर किया
नारी शिक्षा से हुई शिक्षित दूर हुआ था वो अन्धकारा
चारों तरफ आजादी की माँग थी क्योंकि गुलाम था टंकारा
आखिर इक दिन मिली आजादी तो झुम उठा था टंकारा

लेकिन फिर क्यों घिर गया है,
गुलामी में फिर से टंकारा
रिश्वत, भ्रुण-हत्या,
नशाखोरी खा जाएगी मेरा टंकारा
पथ भ्रष्ट नेता कहीं फिर से
न गुलाम कर दें मेरा टंकारा

जागो समाज के आर्यों, जागो
नहीं तो फिर गुलाम होगा मेरा टंकारा
वेद यज्ञ गायत्री को अपनाना होगा
तभी तो बच पाएगा मेरा टंकारा
स्वदेशी अपनाना होगा वेदों का ज्ञान
बढ़ाना होगा तभी तो सजेगा टंकारा

हम सबका तीर्थ है, टंकारा,
हम सबका शिरोधारी है टंकारा
हम सबका अपना घर है टंकारा,
हम सबका दिल है टंकारा
आत्मीय ज्ञान से जाना है हमने इसे
क्योंकि आर्यों की आत्मा है टंकारा।

www.thearyasamaj.org

'शिवरात्रि का सन्देश: सच्चे शिव की खोज और तदनुरूप उसकी उपासना'

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, पता: 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

भारत में प्रत्येक वर्ष फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को शिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है। यह पूर्व ईश्वर स्थानी भगवान शिव की मूर्ति की पूजा, उपवास व रात्रि जागरण आदि कर मनाया जाता है। क्या शिवरात्रि को इसी रूप में मनाना उचित है ? हमें लगता है कि यह प्रश्न सभी को अपने आप से करना चाहिये। शिव का सत्य व यथार्थ स्वरूप क्या है, यह शिवरात्रि को पौराणिक रीति से मनाने वाले बन्धुओं को विदित नहीं होता। सृष्टि के आदि ग्रन्थ वेद हैं। उसमें ईश्वर के पर्यायवाची शब्दों में शिव भी एक विशेषण के रूप में आता है। ईश्वर का मुख्य व निज नाम ओ३म् ही है। ईश्वर कल्याणकारी व सब जीवात्माओं सहित सभी मनुष्यों का मंगलकारी होने से शिव कहलाता है। वह ईश्वर जिसके लिए शिव विशेषण का प्रयोग किया जाता है, क्या वह साकार है ? साकार का अर्थ होता है मनुष्य शरीर के समान व अन्य आकृति वाला होना। वेदों में ईश्वर को शिव कहा गया है और साथ ही यह भी बताया गया है कि वह कल्याणकारी है। यह सारा संसार वा ब्रह्माण्ड उस शिव व विष्णु नामी ईश्वर से सर्वत्र व्याप्त है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में कहा गया है कि 'ईशा वास्यमिदं सर्वम् यत्किं च जगत्यां जगत्।' अर्थात् ईश्वर इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड वा जग के कण-कण में अन्दर व बाहर विद्यमान है। इस मन्त्र व वेदों के अधिकांश मंत्रों से ईश्वर का आकार सर्वव्यापक होना सिद्ध होता है। जो ईश्वर सर्वव्यापक हो वह एकदेशी, किसी शरीर व स्थान विशेष पर सीमित कदापि नहीं हो सकता क्योंकि एकदेशी होना सर्वव्यापक का विपरीत व उल्टा गुण होगा। एक ही पदार्थ दो परस्पर विरोधी गुण नहीं हुआ करते व हो सकते। यदि कोई वस्तु व पदार्थ अदृश्य होता है और कोई कहे कि वह दिखाई भी देता है तो यह असम्भव होने से असत्य ही होता है। इसी प्रकार यदि ईश्वर सर्वव्यापक है। तो वह एकदेशी अर्थात् मनुष्य शरीर में कदापि समाविष्ट नहीं हो सकता। उसे सर्वव्यापकता को त्याग कर एकदेशी होने की आवश्यकता ही क्या है ? जो कारण हमारे अवतारवाद को मानने वाले भाई बताते हैं वह उनका अज्ञान ही है। जो ईश्वर इस ब्रह्माण्ड को बना सकता है, हमारे सूर्य जैसे असंख्य सूर्यों को बनाकर सब ग्रहों व पिण्डों को धारण एवं अपने वश में रख सकता है, उसके लिए रावण और कंस को मारना कोई कठिन व असंभव कार्य नहीं है। वह तो संकल्प कर व विचार कर ही ऐसा कार्य आसानी से कर सकता है। ब्रह्माण्ड को बनाना कठिन है या रावण व कंस को मारना ? आज देश विदेश में रावण व कंस से भी बुरे लोग वा राक्षस संसार में हैं परन्तु उनके वध के लिए तो ईश्वर का कोई अवतार नहीं हुआ। ईश्वर पर यह भी आरोप लगता है कि यदि रावण व कंस को मारना ही था तो उसने इन्हें व ऐसे लोगों को उत्पन्न ही क्यों किया । अवतारवाद का सारा प्रकरण अज्ञान व भ्रम से युक्त है। यह अवतारवाद वेद विरुद्ध एवं वैदिक सिद्धान्तों के सर्वथा विपरीत है। महर्षि दयानन्द तो मानते हैं कि अवतारवाद, मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष व सामाजिक असमानता जिसमें ऊंच-नीच व छुआछूत भी सम्मिलित है तथा स्त्री, शूद्रों सहित ब्राह्मणेतर वर्णों व जन्मना जातियों को वेदाध्ययन से वंचित रखा गया, वह सब कारण इस देश में अज्ञानता के प्रसार, देशवासियों के समस्त दुखों व गुलामी आदि के प्रमुख कारण थे। अतः अवतारवाद का सिद्धान्त अवैदिक, युक्ति तथा तर्क से सिद्ध न होने से अग्राह्य है, आदरणीय नहीं है।

जब हम अवतारवाद की बात करते हैं तो हमें इस प्रश्न पर भी विचार करना चाहिये कि ईश्वर कितने हैं अर्थात् उसकी संख्यायें कितनी हैं ? महर्षि दयानन्द से पूर्व अनेक देवताओं के नाम के आधार पर अनेक ईश्वर की कल्पनायें की जाती थीं। इसका समाधान करते हुए महर्षि दयानन्द द्वारा शास्त्रीय प्रमाणों से यह बताया गया था कि ईश्वर केवल एक ही सत्ता है जो सच्चिदानन्द स्वरूप है। संसार में जितने भी जड़ देवता अग्नि, वायु, जल, आकाश व भूमि आदि हैं, यह सभी दिव्य गुणों से युक्त होने के कारण देव, दिव्य या देवता कहलाते हैं परन्तु यह उपासनीय न होकर केवल चेतन सर्वव्यापक व निराकार ईश्वर जो सभी देवों का भी देव अर्थात् महादेव है, वही सभी मनुष्यों का उपासनीय है। आर्य समाज से इतर मध्यकाल में धार्मिक

www.thearyasamaj.org

जगत में जो लोग व मत-पन्थ आदि अज्ञान से युक्त मान्यताओं व सिद्धान्तों को मानते थे, उन्हें ही आज भी मानते आ रहे हैं। उन्होंने वैदिक सत्य ज्ञान से कोई लाभ प्राप्त नहीं किया है। इसका एक कारण यह भी है कि बहुत से लोगों के मिथ्या धार्मिक मान्यताओं से होने वाले आर्थिक व अन्य प्रकार के हित व लाभ जुड़ जाते हैं, अतः वह इन्हें छोड़ नहीं सकते। दूसरा कारण यह भी है कि सत्य को जानने व मानने वालें संगठित होकर आवश्यकता के अनुसार प्रचार नहीं कर पा रहे हैं। यदि ऐसा हो पाता तो भी देश व विश्व में अज्ञान व अन्धविश्वास कम हो सकते थे। आज आवश्यकता इसी बात की अनुभव हो रही है कि धार्मिक जगत में सत्य ज्ञान को जानने व प्रचार करने वालों की संख्या जितनी अधिक होगी, उतना ही संसार से अज्ञान व अन्धविश्वास मिटेगा और सत्य ज्ञान के प्रचारकों की संख्या जितनी कम होगी, उतनी ही मिथ्या विश्वासों में वृद्धि होगी।

महर्षि दयानन्द अपने आरम्भिक जीवन में शिवभक्त थे और अपने पिता की प्रेरणा से सामान्य जनों की तरह ही मूर्तिपूजा आदि किया करते थे। 14 वर्ष की अवस्था में शिवरात्रि के दिन बोध होने पर उन्होंने मूर्तिपूजा करना छोड़ा दिया था। उसके बाद वह सच्चे शिव व सच्ची उपासना की खोज में लग गये और वर्षों तक प्रयत्न व पुरुषार्थ करने के बाद वह अपने अभीष्ट को प्राप्त करने में सफल हुए। वेदादि समस्त शास्त्रों के अध्ययन तथा योग साधना से उनको यह प्रत्यक्ष व निर्भ्रान्त ज्ञान हुआ था कि सच्चा शिव तो सदैव निराकार स्वरूप में ही विद्यमान रहता है। न उसका कभी अवतार हुआ है, न हो सकता है। उपासना में जो लाभ निराकार व सर्वव्यापक ईश्वर के वेद वर्णित गुणों का योग साधना द्वारा ध्यान लगाकर करने से होता है। वह शिव की मूर्तिपूजा से नहीं होता। मूर्तिपूजा से लाभ तो नहीं अपितु हानियां होती हैं जिनका प्रकाश ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश में सप्रमाण किया है। उन्होंने स्वयं भी शिव, विष्णु, सच्चिदानन्द, अद्वैत नामी व अनेक गुणों वाले ईश्वर का साक्षात्कार कर वेदज्ञान का योग के अनुभवों के अनुरूप साक्षात किया। वेदज्ञान के सत्य सिद्ध होने पर स्वामी दयानन्द जी ने वेदों की ईश्वर आज्ञा कृण्वन्तो विश्मार्यम् को स्वीकार कर उसके अनुसार वेद प्रचार किया। उन्होंने इस कार्य को जारी रखने के लिए अपने अनुयायियों वा शिष्यों के सहयोग से 10 अप्रैल, 1875 को आर्य-समाज की स्थापना भी की। वेदों की आर्यसमाज द्वारा प्रसारित सभी मान्यतायें व सिद्धान्त अकाट्य होने प्रमाणित हैं। आज तक भी किसी मत-मतान्तर के विद्वान से उनका खण्डन नहीं हो सका। दूसरी ओर महर्षि दयानन्द ने मत-मतान्तरों की जो मिथ्या बातें प्रकाशित की, उनका भी निराकरण व समाधान संबंधित मत-मतान्तरों के पुराने व नये आचार्यों द्वारा नहीं किया जा सका। यह महर्षि दयानन्द की दिग्विजय का द्योतक है।

अतंः सर्वव्यापक, निराकार, अजन्मा, अमर व अवतार न लेना वाला ईश्वर ही सच्चा शिव सिद्ध होता है और उसकी उपासना वेद व योग दर्शन की पद्धति से करना प्रत्येक मनुष्य का प्रथम व आवश्यक कर्तव्य है। ईश्वर की भक्ति, उपासना व पूजा में ईश्वर के स्वरूप, गुणों व उपकारों आदि के ध्यान सहित अग्निहोत्र यज्ञ का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसी कारण ऋषि दयानन्द ने अपनी पंच-महायज्ञविधि में दैनिक कर्तव्य सन्ध्योपसना को प्रथम तथा दैनिक देवयज्ञ वा अग्निहोत्र को द्वितीय स्थान पर रखा है। वैदिक मान्यता के अनुसार सभी द्विजों अर्थात् शिक्षित मनुष्यों के लिए इन दोनों यज्ञों व कार्यों सहित पंचमहायज्ञों को करना कर्तव्य है। यह दोनों कर्तव्य कल्याणकारी शिव तथा सर्वव्यापक विष्णु की भक्ति व उपासना के मुख्य उपाय व साधन हैं। सन्ध्या को सिद्ध कर लेने पर ईश्वर की कृपा से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होती है। अग्निहोत्र करने से मनुष्य को स्वर्ग के समान सुखों की प्राप्ति होती है, ऐसे प्राचीन ऋषियों के वचन मिलते हैं। यही ईश्वर व ऋषि दयानन्द सहित सभी ऋषियों की दृष्टि में सत्य व यथार्थ वैदिक उपासना का स्वरूप है। अन्य किसी प्रकार से पूजा पाठ करने से इन लक्ष्यों की प्राप्ति होना असम्भव ही है। हम आशा करते हैं कि शिवरात्रि के अवसर पर सच्चे शिव के यथार्थ स्वरूपपख गुणों व उसकी सच्ची उपासना को जानकर उसके अनुरूप ही उपासना करने का संकल्प हम सबको करना चाहिये। यही शिवरात्रि व महर्षि दयानन्द के जीवन का सन्देश है। यह भी बता दें कि योग की ध्यान विधि से ईश्वरोपासना करना वेद, दर्शन और उपनिषद आदि से सम्मत है तथा मूर्तिपूजा इन सभी शास्त्रों से सम्मत नहीं है।

www.thearyasamaj.org

सर्वतोमुखी क्रांति के अग्रदूत : महर्षि दयानन्द

-डॉ० शिवकुमार शास्त्री आचार्य आर्ष गुरुकुल आर्य समाज सै०-22 चण्डीगढ़

विचारविचक्षण पाठकवृन्द ! प्रसिद्ध इतिहासकार रोम्यां रोलां ने युगप्रर्वतक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा था-

''आर्य समाज सब मनुष्यों एवं सब देशों के प्रति न्याय और स्त्री-पुरुषों की समानता को सिद्धान्त रूप में स्वीकार करता है। यह जन्मना जात-पांत का विरोधी है और गुण-धर्म और स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था को मानता है। इस विभाजन से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं। अस्पृश्यता से आर्यसमाज को घोर घृणा है। स्वामी दयानन्द से बढ़कर हरिजनों के हितों का रक्षक दूसरा कोई कठिनाई से ही मिलेगा। स्त्रियों को दयनीय स्थिति से उबारने, समान अधिकार दिलाने और शिक्षा की उपयुक्त व्यवस्था कराने में दयानन्द जी ने बड़ी उदारता और बहादुरी से काम लिया।

भारत में जो इस समय राष्ट्रीय पुनर्जागरण दीख रहा है, उसमें भी स्वामी दयानन्द ने प्रबल शक्ति के रूप में में काम किया।.......... दयानन्द राष्ट्रीय संगठन और पुनर्निर्माण का उत्साही मसीहा था। मैं समझता हूँ........ राजनीतिक जागरण के बनाए रखने और सही दिशा देने में उनका प्रमुख हाथ रहा है।''

इतिहास साक्षी है कि जिस समय देव दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ, उस समय प्राचीन वैदिकधर्मी नाना प्रकार के मत-मतान्तरों की मदिरा से मत्त होकर पथभ्रष्ट हो चुका था। एक ईश्वर के स्थान पर अनेक मनमाने ईश्वर बना लिये गये थे। श्रेष्ठतम कर्म-यज्ञ-हिंसा का शिकार हो रहा था। वेदों के भाष्य के नाम पर अनर्गल प्रचार हो रहा था। विधर्मी वेदों को गड़रियों के गीत कह कर हमारे धर्म की खिल्ली उड़ा रहे थे। अंध विश्वास और पाखण्ड चरमसीमा पर था। गुरु को ईश्वर से बड़ा समझा जाता था। स्वार्थी और पाखण्डी पण्डितों ने **'स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्'** का फतवा देकर इनके लिए वेदों का द्वार सदा के लिए बन्द कर रखा था। बाल विवाह, वृद्ध-विवाह और बहु विवाह पर जहां कोई प्रतिबन्ध न था, वहां विधवा विवाह तथा पुनर्विवाह की चर्चा करना तक अपराध माना जाता था। हरिजन देवालयों में नहीं जा सकते थे, वे सवर्णों के कुंओं से पानी नहीं भर सकते थे, सतीप्रथा एवं यज्ञों में पशुबलि जैसी बुराइयां धर्म के नाम पर पनप रही थीं। हिन्दू समाज प्याज के छिलकों की तरह सारहीन बना हुआ था। राजनीतिक दृष्टि से हम परतंत्र तो थे ही, आपस में राजा-महाराजा एक दूसरे का विरोध कर अंग्रेजी सत्ता के हाथ मजबूत कर रहे थे। अनाथों एवं विधवाओं का क्रन्दन समाज के लिए अभिशाप बना हुआ था। विदेशी शिक्षा, चिन्तकों, विचारकों एवं मनीषियों के स्थान पर केवल मात्र क्लर्क बना रही थी। सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद सभी के मन बुझे हुए थे। उस समय के शासक सुरा और सुन्दरी के पाश में जकड़े हुए थे। सम्पूर्ण भूमण्डल पर सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करने वालों की सन्तान अपने गौरव को भूलकर अंग्रेजों की चाटुकारिता में ही अपने को धन्य समझने लगी थी, राणा और शिवा की सन्तान अन्याय के खिलाफ बोल नहीं पा रही थी।

ऐसी विषम से विषमतर और विषमतर से विषमतम परिस्थितियों में देव दयानन्द ने आर्यजाति को झकझोरा। आज देश में जो शुभ लक्षण दिखाई दे रहे हैं, उनके मूल में देव दयानन्द का अथक परिश्रम विद्यमान है।

स्वराज शब्द का बोध कराने वाले महर्षि दयानन्द की कृपा से हमारे देश में नई चेतना और जागृति आई थी। स्वामी जी ने हिन्दू धर्म को-जो प्याज के छिलकों की तरह बंटा हुआ था-संगठित करने के लिए एकेश्वरवाद, त्रैतवाद एवं पंचमहायज्ञों का विधान किया।

हिन्दी भाषा के वे प्रबल समर्थक थे। महर्षि ने संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित और अहिन्दीभाषी होते हुए भी अपने ग्रन्थ आर्यभाषा (हिन्दी) में लिखे। सभी आर्यसमाजियों के लिए हिन्दी में व्यवहार करना आवश्यक बताया।

नारी-जो कि पैरों की जूती और नरक का द्वार समझी जाती थी, देव दयानन्द के लिए पूजा और श्रद्धा के योग्य थी। उन्होंने राजर्षि मनु के डिण्डिम घोष का पुनरुद्‌घोष करते हुए कहा-

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।''

स्वराज्य और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के लिए तत्कालीन राजा-महाराजाओं को प्रेरित किया।

गुरुकलीय शिक्षा प्रणाली को जन्म देकर उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में सबको समान अधिकार देने का प्रयास कर ऊँच-नीच की भावना को समाप्त किया। गौ को भारत की समृद्धि का कारण बताते हुए उनकी हत्या पर रोक लगाने की ब्रिटिश सरकार से मांग की।

मज़हबी जुनून से हट कर स्वामी जी ने कहा-**''मेरा कोई नवीन कल्पना व मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है, उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है, उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त में प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता।''**

आपस की फूट के भयंकर परिणामों की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने चेतावनी दी-

''जब भाई-भाई आपस में लड़ते हैं, तब तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।''

''आपस की फूट के कारण कौरवों, पाण्डवों और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो ही गया परन्तु यह भयंकर राक्षस अब भी आर्यों के पीछे लगा है। न जाने कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुःखसागर में डुबो मारेगा।''

जिस ऋषि ने बोध प्राप्ति से लेकर जीवन के अन्त तक अपना क्षण-क्षण संसार के उपकार में व्यतीत किया, जिसने विष पीकर अमृत प्रदान किया, उस महान् ऋषि के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम सब प्रतिज्ञा करें कि देव दयानन्द के अधूरे कार्यों को पूरा कर **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** के नारे को सार्थक सिद्ध करने का भरसक प्रयास करेंगे।

भव्य समारोह के साथ आर्य महासम्मेलन का समापन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के सामूहिक सहयोग से भव्य आर्य महासम्मेलन का आयोजन युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आर्य कॉलेज महिला विभाग सिविल लाईन लुधियाना में 19-02-2017 को उत्साह एवं उल्लास के साथ किया गया। इससे पूर्व दिनांक 18-02-2017 को लुधियाना में शहर की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के द्वारा भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। इस शोभायात्रा की अगुवाई आर्य जगत् के उच्चकोटि के सन्यासी स्वामी सम्पूर्णानन्द, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा, रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी एडवोकेट, चौधरी श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, श्रीमती राजेश शर्मा, श्री विजय सरीन, श्री विपन शर्मा, श्री रणजीत आर्य ने की। सुन्दर झांकियों के द्वारा शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसमें कलश यात्रा, यज्ञ करते हुए, भजन गाते हुए, महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के उद्घोष करते हुए कई मनमोहक दृश्य थे। आर्य कॉलेज महिला विभाग से शुरू होकर यह शोभायात्रा नगर की परिक्रमा करती हुई वहीं आकर सम्पन्न हुई।

दिनांक 19-02-2017 को आर्य महासम्मेलन के शुभ अवसर पर सर्वप्रथम 11 कुण्ड़ीय यज्ञ हुआ। 30 यजमान जोड़ों ने यज्ञकुण्ड़ के चारों ओर बैठकर यज्ञ में अहुतियां प्रदान की। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य रामानन्द जी शिमला वाले एवं सभा के विद्वान् आचार्य सुरेश शास्त्री जी थे। यज्ञ ब्रह्मा तथा अन्य विद्वानों ने पुष्प वर्षा करके सभी यजमान परिवारों को आशीर्वाद दिया। यज्ञ के पश्चात समस्त पंजाब से आए हुए आर्यजनों ने प्रातःराश ग्रहण किया। इसके पश्चात लुधियाना के पुरोहित पं. रमेश शास्त्री व पं. राजेन्द्र व्रत शास्त्री जी भजन मण्ड़ली ने अपने भजनों के द्वारा प्रभु भक्ति एवं महर्षि दयानन्द का गुणगान किया। श्री विजय सरीन जी ने भी प्रभु भक्ति का भजन गाकर ईश्वर महिमा का बखान किया। इसके पश्चात सभा अधिकारियों के साथ स्वामी सम्पूर्णानन्द जी पण्ड़ाल में पधारे। सभी आर्यजनों ने करतल ध्वनि के साथ सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया। समारोह के प्रारम्भ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं स्वामी सम्पूर्णानन्द जी के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। मुख्य समारोह का शुभारम्भ ज्योति प्रज्जवलन के साथ किया किया। स्वामी सम्पूर्णानन्द, श्री सुदर्शन शर्मा, श्रीमती गुलशन शर्मा, आचार्य विष्णुमित्र, आचार्य रामानन्द, श्री प्रेम भारद्वाज, श्री सुधीर शर्मा, श्री अशोक परूथी एडवोकेट, श्री सरदारी लाल आर्य, चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, श्रीमती राजेश शर्मा, श्री विजय सरीन तथा मुख्य रूप से श्री मुनीष मदान एवं श्रीमती शालू मदान ने ज्योति प्रज्जवलित की। सभी विद्वानों एवं गणमान्य अतिथियों को पुष्पमाला पहनाकर स्वागत एवं सत्कार किया गया। मंच का संचालन करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए सभी आर्य जनों को महर्षि दयानन्द जन्मदिवस की हार्दिक बधाई दी। महर्षि दयानन्द के जीवन के बारे में बताते हुए श्री प्रेम भारद्वाज जी ने बताया कि स्वामी दयानन्द जी ने अपने जीवन में राष्ट्र को एक नई दिशा देने का प्रयास किया था। उन्होंने ऐसे समय में एक दीपक जलाया जिस समय सम्पूर्ण भारतवर्ष अज्ञान के गहन अन्धकार में डूबा हुआ था। महर्षि दयानन्द ने शिक्षा के क्षेत्र में, नारी शिक्षा के क्षेत्र में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया, छूआछूत को मिटाने का प्रयास, पाखण्ड़ एवं मूर्तिपूजा का विरोध एवं बाल विवाह जैसी कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। इसके पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी ने ऋषि दयानन्द जी एवं देशभक्ति के गीतों के द्वारा वातावरण को संगीतमय बना दिया। अपने भजनों के माध्यम से श्री वर्मा जी ने आर्यजनों में आर्य समाज के प्रति एवं देश के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करने का

www.thearyasamaj.org

सन्देश दिया। बिजनौर उत्तर प्रदेश से आए वैदिक प्रवक्ता आचार्य विष्णुमित्र जी ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश ड़ालते हुए बड़े सरल एवं सुन्दर शब्दों में आर्यजनों को महर्षि दयानन्द के बताए गए मार्ग पर चलने कर आह्वान किया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सत्य को मानने वाले थे, सत्य के पुजारी थे तथा उन्होंने जीवन में कभी भी असत्य सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं किया। महर्षि दयानन्द समाज को मत, पन्थ और सम्प्रदाय के झगड़ों से मुक्त करना चाहते थे। इसलिए महर्षि दयानन्द ने जीवन पर्यन्त वेदों एवं ऋषियों के सिद्धान्तों पर चलने की प्रेरणा दी। आर्य समाज के रूप में उन्होंने ऐसी संस्था की स्थापना की जो शुद्ध वैदिक एवं मानवता के सार्वभौमिक सिद्धान्तों पर आधारित है।

इसके पश्चात श्री जगत वर्मा जी ने एक और भजन महर्षि दयानन्द के विषय में सुनाकर आर्य जनों को मोहित कर दिया। मुख्य वक्ता के रूप में पधारे आर्य जगत् के ओजस्वी सन्यासी स्वामी सम्पूर्णानन्द जी करनाल वालों ने अपने ओजस्वी एवं प्रेरणादायक उद्बोधन में समाज में फैल रही कुरीतियों, पाखण्डों पर जमकर प्रहार किया। उन्होंने कहा कि जो लोग समाज में धर्म के नाम पर व्यापार कर रहे हैं, अपना धंधा चमका रहे हैं ऐसे लोग घोर और अन्धकारमय योनियों में जाकर दुःख भोगेगें। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जो सत्य एवं सार्वभौम सिद्धान्तों पर आधारित हो। वे पाखण्ड़ एवं अन्धकार को जड़ से समाप्त करना चाहते थे। जो लोग आज पाखण्ड़ फैलाकर, शनि, राहू, केतू आदि ग्रहों का भय दिखाकर समाज को गुमराह करते हैं, ऐसे लोगों को समाज से बहिष्कृत करना चाहिए। लड़के-लड़कियों को मंगलीक बताकर जो तथाकथित पंडित उनका विवाह नहीं होने देते ऐसे लोग घोर पाप के भागी होते हैं। अन्त में स्वामी जी ने आह्वान किया कि यदि आर्य समाज कमर कस कर तैयार हो जाए तो आज भी आर्य समाज के पास वो शक्ति है जिससे समाज में फैली तमाम बुराईयों को जड़ से खत्म किया जा सकता है। इसलिए हम सभी मिलकर आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार करें।

स्वामी सम्पूर्णानन्द जी के उद्बोधन के बाद सभा महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने मंच पर उपस्थित दयानन्द मैडीकल कॉलेज एवं अस्पताल के जरनल सैक्रेटरी श्री प्रेम गुप्ता जी परिचय देते हुए उनके द्वारा किए जा रहे समाज सेवा के कार्यों का वर्णन किया। उनके बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि इन्हीं के प्रयासों से डी.एम. सी. दिन प्रतिदिन उन्नति के पथ पर अग्रसर है। सभा के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं अन्य अधिकारियों ने श्री प्रेम गुप्ता जी को सत्यार्थ प्रकाश एवं पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया। इसके पश्चात इस आर्य महासम्मेलन की संयोजिका श्रीमती राजेश शर्मा जी ने महर्षि दयानन्द के विषय में अपने हार्दिक उद्गार व्यक्त किए। आर्य कॉलेज महिला विभाग की प्रिंसिपल सूक्ष्म आहलूवालिया ने कहा कि मैं ऋषि दयानन्द को नमन करती हूं जिनकी कृपा से आज हमें शिक्षा का अधिकार प्राप्त हुआ है और मैं इस मंच से बोल रही हूँ। उन्होंने कहा कि मैं आप सबके प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूं कि आपने इतनी दूर-दूर से आकर हमें अपना आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम के अन्त में आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में समस्त पंजाब से पधारे हुए आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों को संदेश देते हुए कहा कि आर्य समाजों से वेद प्रचार का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए। वेद प्रचार के कार्यों में सभा आपका भरपूर सहयोग करेगी। सभा प्रधान ने कार्यक्रम में पधारे सभी विद्वानों एवं गणमान्य महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद किया और कहा कि मुझे आशा है कि आपका सहयोग हमें आगे भी इसी प्रकार मिलता रहेगा। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने किया। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम के पश्चात सभी आर्यजनों ने ऋषि लंगर ग्रहण किया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, साहित्य विभाग अधिष्ठाता श्री विनोद भारद्वाज, मन्त्री श्री रणजीत आर्य, अंतरंग सदस्य श्री योगेश सूद, श्री सुदेश आर्य, श्री पुरूषोत्तम शर्मा, श्री वीरेन्द्र कौशिक, श्री सत्यप्रकाश उप्पल, श्री राज कुमार, श्रीमती विनोद गान्धी, श्री मनोहर लाल आर्य आदि उपस्थित थे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में लुधियाना के श्री विजय सरीन, श्री श्रवण बत्रा, श्री रणवीर सिंह ,श्री सुनील शर्मा आदि महानुभावों ने अपना पूर्ण सहयोग दिया।

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च।

मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

सारे संसार का कल्याण करने वाले उस परमपिता परमात्मा को बार-बार नमस्कार।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित-1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

जिया लाल शर्मा	ललित मोहन पाठक	कुलवन्त राय	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् इन्द्रायेन्द्रो परिस्त्रव।

ऋग्वेद 7,113,7

मेरा मन ज्योतिर्मान प्रभु की ओर प्रवाहित हो तथा परमानन्द की प्राप्ति करें।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोधदिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज नवांशहर दोआबा

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. उच्च स्तर की पढ़ाई।
2. मेहनती व अनुभवी स्टाफ।
3. शिक्षा के क्षेत्र में उच्च स्थान।
4. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
5. शिक्षा में देशभक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

❖❖❖

नये सत्र में अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

डा.सी.एम.भंडारी	विनोद भारद्वाज	तरणप्रीत कौर
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापति।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥ (यजुर्वेद 32/5)

हे सर्वोत्कृष्टेश्वर! आप आनन्दस्वरूप और आनन्ददाता हैं, विज्ञानमय और विज्ञानप्रद हैं, सब संसार के अधिष्ठाता और पालन ऐश्वर्य दाता हैं, परमपवित्र और अनन्त बलवान हैं, सब के धारण पोषण करने वाले हैं, कृपा करके हम को ऐसी बुद्धि दें कि जिससे हम सर्वविद्या सम्पन्न हों, यह हमारी बारम्बार प्रार्थना है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर. के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

शिवरात्रि के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।।

☆☆☆☆

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

☆☆☆☆

नये सत्र में अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें *आर.के. आर्य कालेज नवांशहर* में प्रवेश करवायें।

देशबन्धु भल्ला एडवोकेट	सोहन सिंह	जे.के.दत्ता	ए.एस.गिल
प्रधान	उप प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोधदिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.ए.एन.आर्ट एंड क्राफ्ट (A.C.T) कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में

निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. नवांशहर क्षेत्र में आर्ट्स एंड क्राफ्ट का एक मात्र कालेज
2. अनुभवी तथा ट्रेंड स्टाफ।
3. सुसज्जित मैदान।
4. शानदार पेटिंग सिखाने का प्रबन्ध।
5. सभी प्रकार की आधुनिक विद्याओं से युक्त।
6. बोर्डिंग का उचित प्रबन्ध
7. शत्-प्रतिशत् परीक्षा परिणाम।

नये सत्र में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की ओर विशेष ध्यान

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

विनोद कुमार	बख्तावर सिंह	विपिन तनेजा	आशा शर्मा
प्रधान	उप प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

नाप्राप्यमभिवांछन्ति नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।
आपत्सु च न मुहयन्ति नरा: पण्डित बुद्धय् ॥

जो मनुष्य प्राप्त होने के अयोग्य पदार्थों की कभी इच्छा नहीं करते अदृश्य व किसी पदार्थ के नष्ट भ्रष्ट हो जाने पर शोक करने की अभिलाषा नहीं करते और बड़े-बड़े दु:खों से मुक्त व्यवहारों की प्राप्ति में भी मूढ़ होकर नहीं घबराते, वे मनुष्य पंडितों की बुद्धि से युक्त कहाते हैं। (व्यवहारभानु)

- महर्षि दयानन्द

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।
3. अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।
4. आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

नये सत्र में अपनी कन्याओं के उज्वल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ललित मोहन पाठक	ललित शर्मा	अरुणेश कुमार	आरती कालिया
प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवाः क्षुधमिद् वधं ददुः, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व शिवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै. स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
2. धार्मिक शिक्षा।
3. कम्प्यूटर शिक्षा।
4. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।
5. विशाल क्रीडा क्षेत्र।
6. सुन्दर भवन।
7. हरे-भरे वृक्ष।
8. उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।
9. हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	ललित कुमार शर्मा	अंचला भल्ला	सतीश कश्यप
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	कार्यकारी प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

तंमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्
ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

- महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार वूमैन, नवांशहर

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

◆◆◆

विनोद कुमार भारद्वाज	एस.के.बरूटा	डा. सरोज भल्ला
प्रधान	सचिव	प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

राष्ट्र च रोह द्रविणं व चरोह (अथर्व. 13/1/34)

सुख के लिये राज्य और धन को बढाओ।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

नये सत्र में अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

दविन्द्र नाथ शर्मा	विजय सरीन	डा.रमेश चन्द्र तेजपाल
प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ- हे प्रभो! तेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान-साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

मुनीष मदान	विनोद गांधी	रेखा कौल
प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

वेद शास्त्रों को पढ़ने वाला व्यक्ति निर्धन भी अच्छा है परन्तु शास्त्र के अध्ययन से रहित और आचरणहीन मनुष्य धनवान भी अच्छा नहीं। सुन्दर नेत्रों वाला फटे पुराने कपड़ों में भी सुन्दर लगता है परन्तु नेत्रहीन सोने के गहनों से सजा हुआ भी शोभित नहीं होता है।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य गर्ल्ज सीनियर सै.स्कूल

पुराना बाजार, नजदीक दरेसी मैदान, लुधियाना

विद्यालय के विशेष आकर्षण

1. अंग्रेजी व हिन्दी मीडियम में शिक्षा।
2. उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
3. बढ़िया बोर्ड परीक्षा परिणाम।
4. खुले व हवादार कमरे।
5. सांस्कृतिक गतिविधियां।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. गरीब एवं योग्य छात्राओं को छात्रवृत्तियां व वर्दियों का प्रबन्ध।
8. कॉमर्स एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल में स्वच्छ जल के लिये फिल्टर्ज की व्यवस्था।
10. जरूरतमंद छात्राओं के लिये वर्दियों और स्वैटरस वितरण।
11. प्रतिवर्ष बच्चों की भलाई और कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का प्रबन्ध।

नये सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

सुशील मोदगिल	जयप्रकाश	रवि महाजन	राजेश शर्मा	ज्योति किरण शर्मा
प्रधान	उप प्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।

शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः॥

भावार्थ- हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री-नर्सरी से दसवीं कक्षा तक इंग्लिश/ हिन्दी मीडियम, पंजाब पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विशाल एवं हवादार कमरे।
6. शहर के मध्य में स्थित।
7. बढ़िया फर्नीचर।
8. खुला मैदान।
9. शानदार परीक्षा परिणाम।

नये सत्र में प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

संत कुमार
प्रधान

मुनीष मदान
प्रबन्धक

सुनीता मलिक
प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

विद्या:- जिससे ईश्वर से लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थों का सत्य-विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, इसका नाम 'विद्या' है।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

मालवा का शान्ति निकेतन

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

+1 और +2 के साथ-साथ बी.ए. तृतीय वर्ष तक पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला से सम्बन्धित संस्था

1. Post Graduate Diploma in Computer Application.
2. Post Graduate Diploma in Dress Designing & Tailoring

(both affiliated to Punjabi University Patiala)कोर्स भी चल रहे है। इस कालेज में पंजाबी, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, इक्नामिक्स, राजनीति शास्त्र, इतिहास, संगीत, फिलास्फी विषयों के साथ-साथ कम्प्यूटर, आफिस मैनेजमेंट, होम मैनेजमेंट, फाईन आर्ट्स के विषय भी पढ़ाये जा रहे हैं। पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला का केवल यह एक कालेज है जहां फैशन डिजाइनिंग का विषय भी पढ़ाया जाता है।

यू.जी.सी. स्कीम अधीन कई अन्य विषय/ कोर्स शुरू किये गए हैं।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

डा.सूर्यकांत शोरी	भारत भूषण मैनन एडवोकेट	केवल जिन्दल	डा.नीलम शर्मा
प्रधान	महासचिव	उपप्रधान	प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

तीर्थः- जितने विद्याभ्यास, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान , सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियादि उत्तम कर्म हैं, वे सब 'तीर्थ' कहाते हैं क्योंकि इन करके जीवन दुखसागर से तर जा सकते हैं। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल स्कूल, बरनाला

विश्व गुरु स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पद्चिन्हों पर चल कर अपना मानव जीवन सफल बनायें तथा राष्ट्र को सही दिशा दें।

विशेषताएं

1. योग्य, परिश्रमी और अनुभवी अध्यापक वर्ग।
2. प्रबन्धक समिति के शिक्षित और दूरदर्शी सदस्यों द्वारा पूर्ण सहयोग।
3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान।
4. खेलों के साथ साथ सह पाठ्यक्रम क्रियाओं के प्रति विशेष ध्यान।
5. शिक्षण विकास की परीक्षा हेतु समयानुसार परीक्षाएं।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें आर्य माडल स्कूल बरनाला में दाखिल करवायें। सम्पर्क करें

हरमेल सिंह जोशी
प्रधान

भारत भूषण मेनन
मैनेजर

राजेश कुमार गांधी
सैक्रेटरी

उर्मिल सिंगला
प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के

पावन पर्व पर

☆☆☆

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत-प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- खुले तथा हवादार कमरे।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- अन्य सह-क्रियाओं में छात्रों का रचनात्मक सहयोग।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- खेलों का उचित प्रबन्ध।
- बिजली पानी का उचित प्रबन्ध। नये सत्र में बच्चों के दाखिला के लिये सम्पर्क करें।

प्रेम कुमार बांसल एडवोकेट
प्रधान

भारत भूषण मैनन एडवोकेट
वरिष्ठ उप प्रधान

संजीव शोरी
मैनेजर

भारत मोदी
सचिव

रामकुमार सोबती
प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

मुक्ति के साधनः- अर्थात् ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना तथा धर्म का आचरण, पुण्य का करना, सत्संग, तीर्थ सेवन, विश्वास, सत्पुरुषों का संग, परोपकारादि सब अच्छे कामों का करना और सब दुष्ट कर्मो से अलग रहना है, ये सब 'मुक्ति के साधन' कहाते हैं। महर्षि दयानन्द

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर हार्दिक बधाई

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

1. आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के मार्ग दर्शन में बरनाला जिले में अग्रणी शिक्षा संस्था।
2. समय पालन, सामाजिक सहयोग, देश प्रेम, पारस्परिक सद्भाव तथा विश्वास, उत्तरदायित्व की भावना, अनुशासन तथा धर्म और संस्कृति के प्रति आदर का पाठ्यक्रम में समावेश।
3. कम्प्यूटर शिक्षा, संगीत शिक्षा, क्रीड़ा प्रतियोगिताएं, शैक्षणिक भ्रमण, समृद्ध प्रयोगशाला, समृद्ध पुस्तकालय, खुले हवादार कमरे, वाटर कूलर, जैनरेटर तथा प्राथमिक सहायता की सुविधा।

☆☆☆

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

भारत भूषण मैनन — प्रधान
भारत मोदी — उप प्रधान
पवन सिंगला — उपप्रधान
बसन्त शोरी — मैनेजर

संजीव शोरी — सैक्रेटरी
वन्दना गोयल — कार्यकारी प्रिंसीपल
अनीता मित्तल — डायरैक्टर

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, शृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः स्याम शरदः शतं,भूयश्च शरदः शतात् ॥१॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं- हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तथा मैडीकल, नॉन मैडीकल तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।
8. आधुनिक लैब, साईंस ग्रुप +1, +2 के लिये उपलब्ध।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

"नये सत्र में अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।"

अनिल कुमार	**निहाल चंद एडवोकेट**	**सुषमा कुमारी**
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुषः सत्यप्रिय,धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।
(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व ऋषि बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै.स्कूल, बठिंडा

विशेषताएं:

Ph.No.0164-2238328

1.नगर के मध्य स्थित।

2.योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।

3.विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।

4.शानदार परीक्षा परिणाम

5.नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

6.प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, आर.ओ.पानी, आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

पी.डी.गोयल एडवोकेट
प्रधान

रमेश कुमार गर्ग
उप प्रधान

गौरी शंकर
मंत्री

अश्विनी कुमार मोंगा
मंत्री

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

जीव का रहस्यः- जो चेतन, अल्पज्ञ, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुख और ज्ञान-गुण वाला तथा नित्य है, वह 'जीव' कहाता है।

(महर्षि दयानन्द)

ऋषि जन्म दिवस व बोध दिवस के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल एवं वैदिक कन्या पाठशाला

औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. कम्प्यूटर लैब का उचित प्रबन्ध।
5. पुस्तकालय की सुविधा।
6. साफ-सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
7. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
8. सांस्कृतिक आधार।
9. बिजली के पंखे तथा शीतल पेयजल का प्रबन्ध।
10. शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
11. नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	**अशोक कुमार अग्रवाल**	**विजय अग्रवाल**	**नीरू शैली**
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

पुरुषार्थः-अर्थात् सर्वथा आलस्य छोड़ के उत्तम व्यवहारों की सिद्धि के लिये मन, शरीर,वाणी और धन से जो जो अत्यन्त उद्योग करना है, उसनको 'पुरुषार्थ' कहते हैं। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

श्रीराम आर्य सी.सै. स्कूल पटियाला

(Affiliated to P.S.E.B)

❖❖❖

■ प्रमुख विशेषताएं ■

1. शत प्रतिशत बोर्ड परिणाम।
2. सुयोग्य और अनुभवी स्टाफ।
3. शिक्षा का आधुनिक ढंग।
4. हिन्दी, अंग्रेजी व पंजाबी माध्यम।
5. उच्च शिक्षा, कम शुल्क।
6. प्राकृतिक वातावरण।
7. खुले व हवादार कमरे।
8. बड़ा खेल का मैदान।
9. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष ध्यान।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

डा. वीरेन्द्र कौशिक	अश्विनी मेहता	चन्द्रमोहन कौशल
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

अविद्या:- जो विद्या से विपरीत है, भ्रम, अंधकार और अज्ञानरूप है, इसलिये इसको 'अविद्या' कहते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व शिवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

❒ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह-विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10. रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11. प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सोमप्रकाश	**शैलेन्द्र मेहरा**	**किरण जिन्दल**
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरितादृवाध्स्व मा सुचरिते भज।

यजु. *4/28*

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

***

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के शुभ अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

***

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ

निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व
शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के
विकास के लिये निरन्तरकार्यरत,
नैतिक शिक्षा पर
विशेष बल।

***

नए सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य
और आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये
सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा	सुधीर शर्मा	मीनू कपूर
प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थः वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

❖❖❖

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के शुभ अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै. स्कूल बस्ती गुजां, जालन्धर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये,सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

सरदारी लाल आर्य	विशाल पुरुथी	श्रीमती सारिका
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

पंडितः- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हितकारी है उसको पंडित कहते हैं।

–महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोधपर्व के पावन अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

डी.एन.माडल सी.सै. स्कूल मोगा

❒ विशेषताएं ❒

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ।
2. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
3. कम्प्यूटर कक्षाओं, पुस्तकालय एवं समृद्ध प्रयोगशालाओं का उत्तम प्रबन्ध।
4. गत वर्ष की उज्जवल उपलब्धियों, शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

उच्च स्तरीय शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और राष्ट्रीय निर्माण में क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संस्था।

सी.बी.एस.ई. दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

सुदर्शन शर्मा प्रधान	देवेन्द्र नाथ शर्मा सैक्रेटरी	योगेश गोयल उप प्रधान
अश्विनी कुमार शर्मा ज्वायंट सैक्रेटरी	साथी विजय कुमार सदस्य	डा. सुरजीत मान कार्यकारी प्रिंसीपल

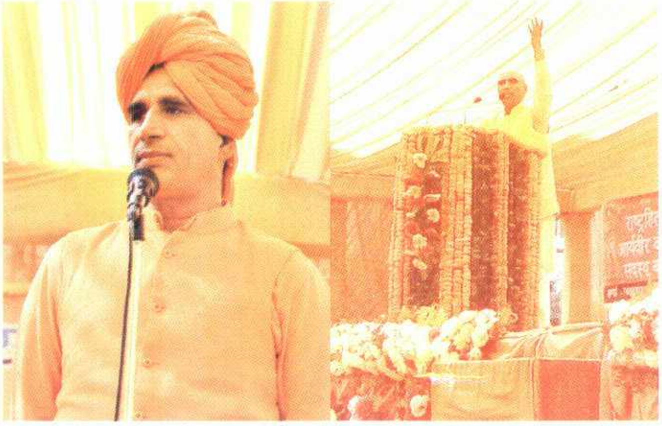

आर्य महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुये स्वामी सम्पूर्णानंद जी करनाल एवं आचार्य विष्णु मित्र जी बिजनौर।

लुधियाना में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में हुये आर्य महासम्मेलन से पूर्व 11 कुण्डीय हवन यज्ञ किया गया।

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर 11 कुण्ड़ीय हवन यज्ञ में भाग लेते हुए आर्यजन।

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर यज्ञ कराते हुए आचार्य रामानन्द तथा सुरेश शास्त्री।

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर कार्यक्रम में उपस्थित आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती गुलशन शर्मा तथा उनके साथ कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती प्रवेश शर्मा जी।

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर मंच पर विराजमान स्वामी सम्पूर्णानंद जी करनाल एवं आचार्य विष्णु मित्र जी बिजनौर।

रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17 RNI No. 26281/74

शोभायात्रा की अगुवाई करते हुए स्वामी सम्पूर्णानन्द, सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज व अन्य

शोभायात्रा के दौरान बाजार से निकलते हुए घुड़सवारों की झांकियां।

शोभा यात्रा की अगुवाई के लिये जाते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं स्वामी सम्पूर्णानंद जी।

शोभायात्रा के अवसर पर सुसज्जित वेशभूषा में बैठे स्वामी सम्पूर्णानन्द, सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा व महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज।

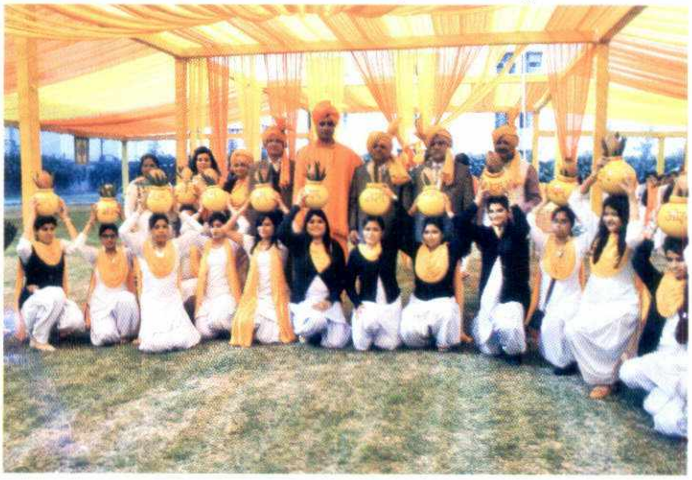

शोभायात्रा के दौरान सिर पर कलश उठाए स्कूल की छात्राएं तथा उनको आशीर्वाद प्रदान करते स्वामी सम्पूर्णानन्द, सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, महामन्त्री प्रेम भारद्वाज, रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी व अन्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में मनाये गये आर्य महासम्मेलन के अवसर पर धन्यवाद करती हुई आर्य कालेज महिला विभाग की प्रमुख श्रीमती सूक्ष्म आहलूवालिया। महासम्मेलन की सफलता में इनका सहयोग सराहनीय रहा।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।